

STATUTORY WARNING : CHEWING OF SUPARI IS INJURIOUS TO HEALTH

25 को गूजेंगे गरबा के सुर, हरि बोल ट्रस्ट के ‘नवरात्रि डांडिया धमाल’ की तैयारियां तेज

लाइव डीजे 'रास-ए-नवरात्रि नाइट्स' के साथ एंकर राशिद और सिंगर काजल यादव बिखेरेंगे जलवा

टीएनएफ टुडे, आगरा।

शहर के कमला नगर स्थित रमन वाटिका में आगामी 25 अक्टूबर 2026 (दिन रविवार) को शाम 6:00 बजे से एक भव्य 'नवरात्रि डांडिया धमाल' का आयोजन होने जा रहा है। यह भव्य कार्यक्रम हरि बोल ट्रस्ट द्वारा आयोजित किया जा रहा है, जिसकी तैयारियां संस्था के पदाधिकारियों द्वारा बेहद जोर-शोर से की जा रही हैं। कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक सुरेश चंद गर्ग 'तपन गुप्त', प्रमोद सिंघल 'श्रीन वैली', मुरारी प्रसाद अग्रवाल 'एकता बिल्डर' एवं शयुन बंसल हैं। हरि बोल ट्रस्ट की संस्थापक अध्यक्ष ममता सिंघल ने बताया कि इस वर्ष 'नवरात्रि डांडिया धमाल' में विशेष रूप से लाइव डीजे 'रास-ए-नवरात्रि नाइट्स' (गरबा)



ममता सिंघल



मयंक अग्रवाल



मोहन अग्रवाल

का भव्य आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस उत्सव को यादगार बनाने के लिए कई नामचीन कलाकार अपनी प्रस्तुतियां देंगे। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षणों में मशहूर एंकर राशिद, जानी-मानी सिंगर काजल यादव, सिंगर गुड्डु भारती और एंकर ज्योति शर्मा शामिल रहेंगे, जो अपनी आवाज

और अंदाज से समां बांधेंगे। डांडिया और गरबा के अलावा इस महोत्सव में आने वाले आगंतुकों के लिए कई अन्य खास इंताजाम भी किए गए हैं। कार्यक्रम में आकर्षक सेल्फी प्वाइंट, अनलिमिटेड फूड, एक्साइटिंग गिफ्ट्स के साथ-साथ मंजेदार गेम्स और विभिन्न प्रकार के स्टॉल्स भी लगाए जा रहे हैं।

तैयारियों में जुटे प्रमुख पदाधिकारी:

इस भव्य आयोजन को सफल बनाने के लिए ट्रस्ट की पूरी टीम जुटी हुई है। तैयारियों की कमान मुख्य रूप से संस्थापक अध्यक्ष ममता सिंघल, सलाहकार राजीव अग्रवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनुज सिंघल, कार्यक्रम अध्यक्ष मयंक

अग्रवाल, कोषाध्यक्ष मोहन अग्रवाल, महानगर अध्यक्ष संतोष गुप्ता, महामंत्री चिक्की गोयल, कोषाध्यक्ष गौरव बंसल, उपाध्यक्ष हरिश पंजवानी व कमल गोलानी और मंत्री सतीश तोमर, सौरभ सिंघल, विनय अग्रवाल, प्रखर गुप्ता, यश अग्रवाल तथा महिला विंग से संरक्षक डोली अग्रवाल, अर्चना अग्रवाल, दीप्ति गुप्ता, विनीता अग्रवाल, शशि गुप्ता, बबली जैन, महामंत्री चांदनी बंसल, कोषाध्यक्ष प्रियंका गोयल, कोऑर्डिनेटर श्वेता मित्तल, उपाध्यक्ष मीना गर्ग, राजकुमारी अग्रवाल, राधा अग्रवाल और सीमा अग्रवाल आदि पदाधिकारी भी व्यवस्थाओं को अंतिम रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

अपराध नियंत्रण के गुर सीखेंगे पुलिसकर्मी, व्यवहार सुधारने पर जोर



टीएनएफ टुडे, फतेहाबाद।

सहायक पुलिस सहायक फतेहाबाद ने सर्कल के फोर्स को अपराध नियंत्रण तथा जनता के साथ व्यवहार को लेकर प्रशिक्षण दिया गया, प्रश्नोत्तरी के माध्यम से लिखित परीक्षा का आयोजन कराया गया। सहायक पुलिस आयुक्त फतेहाबाद इमरान अहमद के द्वारा सोमवार को थाना फतेहाबाद,बमरौली कटारा, डौकी के प्रभारी, उपनिरीक्षक व सिपाहियों का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें अपराध नियंत्रण को लेकर टिप्स दिये गए तथा

- एसीपी ने तीन थानों के पुलिसकर्मीयों को दिया प्रशिक्षण।
- अपराध रोकथाम और भीड़ नियंत्रण के बताए तरीके।
- जनता से बेहद व्यवहार और संवाद के दिए निर्देश ।

कैसे हम जनता के बीच में रहकर उनसे व्यवहार करें कैसे भीड़ नियंत्रण को लेकर योजना बनाएं तथा हमारा व्यवहार कैसा हो इसको लेकर मौखिक तथा लिखित परीक्षा के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया

गया था। इस दौरान प्रभारी निरीक्षक फतेहाबाद विनोद कुमार मिश्र, निरीक्षक अपराध फतेहाबाद पुरुषोत्तम पाल, थानाध्यक्ष डौकी सुनीत शर्मा, थानाध्यक्ष बमरौली कटारा दीपक कुमार तिवारी सहित आदि रहे ।

सहायक पुलिस आयुक्त फतेहाबाद से बात करने पर बताया कि इस तरह के प्रशिक्षण के माध्यम से प्रभारी , उपनिरीक्षक तथा सिपाहियों को प्रशिक्षित किया गया है जिससे अपराध नियंत्रण तथा जनता के बीच में हमारा व्यवहार कैसा हो इसको लेकर प्रशिक्षण दिया गया था।



सड़क पर जलभराव से धंसा बाह-फतेहाबाद मार्ग, हादसे का खतरा

टीएनएफ टुडे, फतेहाबाद।

बाह-फतेहाबाद मार्ग पर नयापुरा गांव के पास सड़क पर पानी भरने से सड़क का एक हिस्सा धंस गया है। इससे यहां हादसे का खतरा बढ़ गया है। रात के अंधेरे में पानी से भरी सड़क पर धंसे हिस्से का अंदाजा नहीं लगने से कोई बड़ा हादसा हो सकता है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, नयापुरा गांव के पास बाह- फतेहाबाद मार्ग पर ग्रामीणों की ओर से सड़क पर पानी छोड़े जाने से पानी भर गया है। लगातार पानी जमा होने के कारण सड़क का एक हिस्सा धंस गया है। सड़क पर पानी भरा होने से वाहन चालकों को धंसे हुए हिस्से का पता नहीं चल पाता। विशेषकर रात के समय यहां से गुजरने वाले दोपहिया और चार पहिया वाहनों के लिए खतरा बना हुआ है। स्थानीय लोगों के मुताबिक, इसी स्थान पर पहले भी हादसा हो चुका है। पूर्व में एक रोडवेज बस ने महिला को कुचल दिया था। हादसे में नयापुरा गांव की महिला की मौके पर ही मौत हो गई थी। इसके बाद भी सड़क पर पानी भरने और सड़क धंसने की समस्या गंभीर बनी हुई है।

सड़क के गड्ढों में समाया युवक का जीवन, हादसे में मौत

जलभराव के पास बाइक को अज्ञात वाहन ने मारी टक्कर, साथी गंभीर घायल

- हादसे में 18 वर्षीय रिकू की मौके पर मौत
- 12 साल का सूरज गंभीर रूपा से घायल
- सड़क पर गहरे गड्ढों और जलभराव से हादसों का खतरा

टीएनएफ टुडे, फतेहाबाद।

बाह-फतेहाबाद मार्ग पर नयापुरा के पास सड़क पर जलभराव गड्ढों के पास अज्ञात वाहन ने बाइक में टक्कर मार दी इस दौरान एक की मौके पर मौत एक गंभीर रूप से घायल हो गया पुलिस ने घायल को अस्पताल में भर्ती कराया गया और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया घटना से घर में कोहराम मचा हुआ है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार रिकू पुत्र रामदास 18 निवासी भीर बटेश्वर थाना बाह आगरा अपने साथी सूरज पुत्र मायाराम उम्र 12 के साथ रिकू की ससुराल बाइक से जा रहे थे। सोमवार की शाम सात बजे



के करीब तभी फतेहाबाद-बाह मार्ग पर नयापुरा के पास सड़क पर हो रहे जलभराव गड्ढों के पास अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी जिससे रिकू व सूरज सड़क पर पानी में गिर गए जहां रिकू की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं सूरज घायल हो गया जानकारी पर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी वहीं घायल को अस्पताल भेजा गया वहीं मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है घटना की जानकारी दोनों के

परिजनों को दी गई है जिससे घर में कोहराम मच गया है। वहीं ग्रामीणों का कहना है कि सड़क पर काफी गहरे-गहरे गड्ढे हो गए यहां जिनमें पानी भरा हुआ है वाहन चालकों को रात के समय अंदाजा नहीं होता है कि कितने गहरे गड्ढे हैं आए दिन हादसे से हो रहे हैं कभी ट्रैक्टर-ट्राली पलट जाती है। तो कभी बाइक सवार गिरकर घायल हो रहे हैं लेकिन अभी तक प्रशासन की ओर से कोई इस ओर ध्यान नहीं दिया गया है।

आवारा कुत्ते का हमला, 4 साल की मासूम घायल!

फतेहाबाद। थाना फतेहाबाद क्षेत्र के जवाहरपुर गांव में सोमवार को घर के बाहर खेल रही चार साल की बच्ची पर आवारा कुत्ते ने हमला कर दिया। कुत्ते के काटने से बच्ची घायल हो गई। वीख-पुकार सुनकर पहुंचे परिजनों ने किसी तरह बच्ची को कुत्ते से बचाया। इसके बाद उसे सीएचसी फतेहाबाद में भर्ती कराया गया। जानकारी के अनुसार, जवाहरपुर गांव निवासी पवन कुमार की चार साल की बेटी वैष्णवी सोमवार को घर के बाहर खेल रही थी। इसी दौरान अचानक पहुंचे आवारा कुत्ते ने बच्ची पर हमला कर दिया और उसे कई जगह काट लिया। बच्ची की चीख सुनकर परिजन मौके पर पहुंचे और कुत्ते को भगाकर उसे बचाया। घटना के बाद परिजन घायल बच्ची को सीएचसी फतेहाबाद ले गए।

प्रतिमा विसर्जन स्थल का डीसीपी ने लिया जायजा



टीएनएफ टुडे, फतेहाबाद।

प्रतिमा विसर्जन के दौरान श्रद्धालुओं की सुरक्षा और व्यवस्थाओं को लेकर सोमवार को पुलिस उपायुक्त पूर्वी जोन अभिषेक अग्रवाल ने थाना बमरौली कटारा क्षेत्र के नगला सबला स्थित समोगर घाट का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने विसर्जन स्थल पर सुरक्षा इंतजाम, भीड़ प्रबंधन और यातायात व्यवस्था का बारीकी से जायजा लिया।

निरीक्षण के दौरान डीसीपी पूर्वी ने मौके पर तैनात पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रतिमा विसर्जन के समय विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा सर्वोपरि है। घाट पर आने वाली भीड़ को व्यवस्थित रखने के साथ आसपास के मार्गों पर यातायात सुचारू बनाए रखने के लिए पुख्ता इंतजाम किए जाएं।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश

दिए कि विसर्जन स्थल पर किसी भी प्रकार की अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न न हो।

इसके लिए पुलिस बल लगातार निगरानी रखे और संवेदनशील स्थानों पर विशेष सतर्कता बरती जाए। इस दौरान थानाध्यक्ष बमरौली कटारा दीपक तिवारी, उपनिरीक्षक करन सिंह, अश्वनी पाल, आकांक्षा शर्मा और अनू चौधरी सहित अन्य पुलिसकर्मी मौजूद रहे।

एमएलसी चुनाव की सरगमीं तेज, शिक्षक-स्नातक वोटरों पर नजर!

स्नातक व शिक्षक मतदाताओं से किया संवाद, शिक्षा से जुड़े मुद्दों पर हुई चर्चा

टीएनएफ टुडे, आगरा।

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं एत्मादपुर विधानसभा क्षेत्र 86 के पूर्व प्रत्याशी डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान ने आगरा स्थित किड्स पब्लिक स्कूल सहित अन्य विद्यालयों में पहुंचकर स्नातक एवं शिक्षक एमएलसी चुनाव को लेकर जनसंपर्क किया। इस दौरान उन्होंने शिक्षकों, स्नातक मतदाताओं एवं अन्य संबंधित लोगों से मुलाकात कर चुनाव और प्रत्याशियों के समर्थन को लेकर चर्चा की। जनसंपर्क के दौरान डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान ने स्नातक एवं शिक्षक वर्ग से जुड़े मतदाताओं से संवाद स्थापित किया। उन्होंने चुनाव में मतदाताओं की भूमिका, शिक्षा व्यवस्था से जुड़े मुद्दों तथा शिक्षकों और युवाओं की अपेक्षाओं पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रत्येक मतदाता की भागीदारी महत्वपूर्ण है और अपने मतधिकार



किया। उन्होंने चुनाव में मतदाताओं की भूमिका, शिक्षा व्यवस्था से जुड़े मुद्दों तथा शिक्षकों और युवाओं की अपेक्षाओं पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रत्येक मतदाता की भागीदारी महत्वपूर्ण है और अपने मतधिकार

का जिम्मेदारी के साथ प्रयोग करना चाहिए। डॉ. चौहान ने विभिन्न विद्यालयों में संपर्क कर लोगों से चुनाव संबंधी जानकारी साझा की और प्रत्याशियों के पक्ष में समर्थन जुटाने का प्रयास किया। उन्होंने शिक्षक समुदाय तथा स्नातक

मतदाताओं से जुड़े विषयों पर संवाद को लोकतांत्रिक प्रक्रिया का अहम हिस्सा बताया।

समाजवादी पार्टी से जुड़े डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान एत्मादपुर विधानसभा क्षेत्र में राजनीतिक एवं सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय

- स्नातक और शिक्षक एमएलसी चुनाव पर संवाद
- विभिन्न विद्यालयों में किया जनसंपर्क
- शिक्षक संघ के पदाधिकारी भी रहे मौजूद

रहते हैं। इस जनसंपर्क के माध्यम से उन्होंने स्नातक एवं शिक्षक एमएलसी चुनाव को लेकर मतदाताओं के बीच संवाद और संपर्क बढ़ाने पर जोर दिया। इसी दौरान हरदेव चौहान मिडिया प्रभारी, अजीम अब्बास, एवं शिक्षक संघ भी सेकड़ों मौजूद रहे।



धूमधाम के साथ किया गया देवी प्रतिमाओं का विसर्जन
फतेहाबाद। शारदीय नवरात्र पर्व पर पंडालों में स्थापित की गई देवी प्रतिमाओं का सोमवार को धूमधाम के साथ यमुना नदी में विसर्जन किया गया। सोमवार को पूजा अर्चना के बाद साउंड बजाते हुए नाचते गाते और अमीर गुलाल उड़ाते हुए देवी की प्रतिमाओं को लेकर भक्त चल रहे थे। सभी देवी प्रतिमाओं को यमुना नदी के शंकरपुर घाट,स्वारा,ईधौन, जोनेश्वर डौकी के वांजिदपुर, नगरिया आदि घाटों पर प्रशासन द्वारा खुदवाए गये गड्ढों में पुलिस द्वारा कराया गया। सभी घाटों पर पुलिस मुस्तैद रही।

टीएनएफ टुडे मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड के लिए **धीरज शर्मा** द्वारा श्रीराम मार्केट फूलपुर अइड़ा, देवरी रोड, फतेहाबाद आगरा से प्रकाशित एवं मुद्रक पवन पाठक द्वारा इम्प्रेसेशन प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड गुरु का ताल सिकंदरा रोड आगरा से मुद्रित।

संपादक: धीरज शर्मा, फोन: 9412359817, E mail: tnftoday.com@gmail.com वेबसाइट: www.tnftoday.com

पंजीयन नं. UPHIN/25/A3702 (संपादक इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.पी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।)

श्रीराम की विजय का आशीर्वाद है आरएसएस

विजयादशमी: श्रीराम के आदर्शों से संघ के सौ वर्षों की यात्रा और पंच परिवर्तन के संकल्प तक

○ राहुल सारस्वत, पूर्व विभागीय संगठनमंत्री, अभाविप

भारतीय संस्कृति में कुछ तिथियाँ केवल कैलेंडर का हिस्सा नहीं होतीं, बल्कि वे हमारी सभ्यतागत चेतना, राष्ट्रीय स्वाभिमान और सांस्कृतिक निरंतरता की प्रतीक होती हैं। विजयादशमी ऐसी ही एक पावन तिथि है। यह धर्म की अधर्म पर, सत्य की असत्य पर और न्याय की अन्याय पर विजय का संदेश देती है। यही वह तिथि है, जिससे आधुनिक भारत के इतिहास में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना का अध्याय भी जुड़ा है।

27 सितंबर 1925 को विजयादशमी के दिन डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। एक और भगवान श्रीराम की विजय भारतीय जनमानस में मयार्वा, साहस, कर्तव्य और धर्म की प्रतिष्ठा का प्रतीक है, तो दूसरी ओर संघ की स्थापना व्यक्ति-निर्माण के माध्यम से समाज को संगठित करने और राष्ट्रजीवन को सशक्त बनाने की पहल के रूप में सामने आई।

वर्ष 2025 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने सौ वर्ष पूरे किए। यह शताब्दी केवल एक संगठन की यात्रा का पड़ाव नहीं, बल्कि उसके विचार, कार्यपद्धति, सामाजिक भूमिका और भविष्य के संकल्पों पर विचार करने का अवसर भी है। इसी संदर्भ में संघ द्वारा प्रस्तुत पंच परिवर्तन की अवधारणा विशेष महत्त्व रखती है।

‘श्रीराम की विजय का आशीर्वाद है आरएसएस’—यह किता किसी प्रत्यक्ष ऐतिहासिक संबंध का दावा नहीं, बल्कि उस सांस्कृतिक प्रेरणा की अभिव्यक्ति है, जिसमें भगवान श्रीराम के आदर्शों और राष्ट्र-निर्माण के संकल्प के बीच वैचारिक साय्य देखा जाता है। श्रीराम की मयार्वा, डॉ. हेडगेवार की संगठन-दृष्टि और संघ के शताब्दी वर्ष का पंच परिवर्तन का अह्दान—इन तीनों को समझना आज के भारत के लिए प्रासंगिक है।

भगवान श्रीराम की विजय : राष्ट्रजीवन के लिए शाश्वत प्रेरणा

भगवान श्रीराम की कथा केवल रावण पर विजय की कथा नहीं है। यह उस संघर्ष का प्रतीक है, जिसमें शक्ति के साथ मयार्वा, ज्ञान के साथ विवेक और अधिकार के साथ कर्तव्य का महत्त्व स्थापित होता है। रामायण के अनुसार, लंका के राजा रावण के पास अपराध सामर्थ्य, विद्वता और वैभव था। किंतु उसका अहंकार और दूसरों के अधिकारों का हनन उसके पतन का कारण बना। इसके विपरीत, भगवान श्रीराम ने कठिन परिस्थितियों में भी मयार्वा और कर्तव्य का मार्ग नहीं छोड़ा। पिता के वचन की रक्षा के लिए वनवास स्वीकार करना, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखना और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना उनके चरित्र की महानता को प्रकट करता है।

श्रीराम की विजय का सबसे महत्त्वपूर्ण संदेश यह है कि शक्ति का वास्तविक मूल्य उसके सदुपयोग में है। नेतृत्व की सार्थकता केवल विजय प्राप्त करने में नहीं, बल्कि न्याय की स्थापना और लोककल्याण के उद्देश्य को पूरा

करने में है।

रामायण में श्रीराम और उनके सहयोगियों के प्रसंग हमें यह भी बताते हैं कि कोई बड़ा लक्ष्य अकेले नहीं प्राप्त होता। हनुमान की निष्ठा, लक्ष्मण का समर्पण, जाम्बवान का अनुभव, सुग्रीव का सहयोग और वानर सेना का सामूहिक परिश्रम उस विजय के महत्त्वपूर्ण पक्ष थे। नेतृत्व, संगठन, विश्वास और साझा उद्देश्य ने मिलकर असंभव प्रतीत होने वाले कार्य को संभव बनाया।

यहाँ से राष्ट्र-निर्माण की एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा मिलती है—जब व्यक्ति अपने निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर किसी व्यापक उद्देश्य के लिए कार्य करता है, तब उसकी क्षमता समाज की शक्ति बन जाती है।

विजयादशमी पर रावण दहन भी इसी आत्ममंथन की प्रेरणा देता है। वास्तविक विजय केवल किसी बाहरी प्रतिद्वंद्वी पर नहीं, बल्कि अपने भीतर के अहंकार, लोभ, क्रोध, अन्याय और असंयम पर प्राप्त करनी होती है। यही श्रीराम का शाश्वत संदेश है और यही किसी सशक्त समाज के निर्माण की पहली शर्त भी है।

डॉ. हेडगेवार की दृष्टि और संघ की स्थापना

वर्ष 1925 का भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था। स्वतंत्रता की आकांक्षा देशभर में प्रबल थी। राष्ट्रीय चेतना के विभिन्न प्रयास चल रहे थे, लेकिन सामाजिक संगठन, सामूहिक अनुशासन और राष्ट्रीय आत्मविश्वास को मजबूत करने की आवश्यकता भी अनुभव की जा रही थी।

इसी ऐतिहासिक परिवेश में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। उनकी दृष्टि में राष्ट्र की शक्ति केवल राजनीतिक स्वतंत्रता या शासन-व्यवस्था में नहीं, बल्कि नागरिकों के चरित्र, सामाजिक एकता और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व में भी निहित थी।

संघ की शुरूआत विजयादशमी के दिन हुई और उसके साथ व्यक्ति-निर्माण को केंद्र में रखने वाली एक संगठनात्मक यात्रा आरंभ हुई। शाखा-पद्धति, सामूहिक अभ्यास, बौद्धिक चर्चा और अनुशासन को इस कार्यपद्धति के प्रमुख आधारों के रूप में विकसित किया गया।

संघ के विचार के अनुसार, यदि व्यक्ति में राष्ट्र के प्रति समर्पण, समाज के प्रति संवेदनशीलता और अनुशासित जीवन का भाव विकसित हो, तो वह अपने परिवार, समुदाय और व्यापक राष्ट्रजीवन में सकारात्मक योगदान दे सकता है।

यही व्यक्ति से समाज और समाज से राष्ट्र के निर्माण की अवधारणा है। भगवान श्रीराम का जीवन मयार्वा और कर्तव्य की प्रेरणा देता है, जबकि डॉ. हेडगेवार की संगठन-निर्माण की पहल सामूहिक शक्ति को जाग्रत करने का विचार प्रस्तुत करती है। दोनों अलग-अलग कालखंडों के प्रसंग हैं, लेकिन इनके मूल्यों पर विचार करते हुए हम समझ सकते हैं कि किसी भी राष्ट्र की स्थायी शक्ति उसके नागरिकों के चरित्र और साझा उत्तरदायित्व से बनती है।

संघ के सौ वर्ष : एक यात्रा, अनेक अनुभव और भविष्य का संकल्प

वर्ष 1925 में नागपुर से आरंभ हुई संघ की यात्रा ने सौ वर्षों में व्यापक विस्तार प्राप्त किया। इस अवधि में संघ की शाखा-पद्धति, स्वयंसेवक-आधारित कार्य और विभिन्न क्षेत्रों में उससे जुड़े संगठनों एवं गतिविधियों का विस्तार हुआ। शिक्षा, सेवा, सामाजिक कार्य और सार्वजनिक जीवन के अनेक क्षेत्रों में संघ से जुड़े प्रयासों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

संघ की यात्रा को समझने के लिए उसके संगठनात्मक विस्तार के साथ-साथ उसके घोषित उद्देश्यों और सामाजिक कार्यों को भी देखना आवश्यक है। किसी भी बड़े संगठन की प्रासंगिकता केवल उसकी संख्या या विस्तार से निर्धारित नहीं होती, बल्कि इस बात से भी होती है कि वह समाज में किस प्रकार का परिवर्तन लाने का प्रयास करता है।

शताब्दी वर्ष इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। यह अतीत की यात्रा पर गर्व करने के साथ भविष्य के दायित्वों को पहचानने का अवसर है। सौ वर्षों की यात्रा के बाद प्रश्न केवल यह नहीं है कि संगठन कितना विस्तृत हुआ, बल्कि यह भी है कि समाज में समरसता, नागरिक अनुशासन, पारिवारिक संस्कार, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और स्वदेशी चेतना को कितना व्यापक बनाया जा सकता है।

इसी संदर्भ में संघ का पंच परिवर्तन का अह्दान महत्त्वपूर्ण हो जाता है। यह पाँच ऐसे क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव की बात करता है, जिनका संबंध सीधे व्यक्ति के दैनिक जीवन और राष्ट्र के भविष्य से है।

ये पाँच परिवर्तन हैं—सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्व का बोध अर्थात् स्वदेशी और आत्मनिर्भरता की भावना, तथा नागरिक कर्तव्य।

पंच परिवर्तन : शताब्दी वर्ष का सामाजिक संकल्प

संघ की पंच परिवर्तन अवधारणा का मूल विचार यह है कि राष्ट्र का व्यापक परिवर्तन केवल नीतियों और व्यवस्थाओं से नहीं, बल्कि नागरिकों की जीवनशैली, सोच और व्यवहार में सकारात्मक बदलाव से भी संभव होता है। यदि व्यक्ति स्वयं अपने आचरण में परिवर्तन लाए, तो परिवार, समाज और राष्ट्र में उसका व्यापक प्रभाव दिखाई दे सकता है।

पंच परिवर्तन के ये पाँच आयाम भारतीय सांस्कृतिक परंपरा और आधुनिक सामाजिक आवश्यकताओं के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

1. सामाजिक समरसता : भेदभाव से ऊपर उठकर आत्मीय समाज

भारत की सभ्यता ने विविधता में एकता का संदेश दिया है। हमारी भाषाएँ, परंपराएँ, क्षेत्रीय संस्कृतियाँ और सामाजिक अनुभव अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन राष्ट्र के प्रति साझा उत्तरदायित्व हमें एक सूत्र में बाँधता है।

सामाजिक समरसता का अर्थ केवल एकता की बात करना नहीं, बल्कि उसे व्यवहार में उतारना है। समाज में किसी व्यक्ति के साथ



जन्म, जाति, वर्ग अथवा सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव न हो; प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान मिले और सामाजिक जीवन में सबकी सहभागिता सुनिश्चित हो—यही समरस समाज का आधार है।

भगवान श्रीराम की कथा में निषादराज गुह के साथ मित्रता, शबरी के प्रति आत्मीयता और विभिन्न समुदायों के सहयोग से लंका विजय के प्रसंग इस बात की प्रेरणा देते हैं कि विश्वास और सहभागिता किसी भी बड़े उद्देश्य के लिए आवश्यक हैं।

आज सामाजिक समरसता का अर्थ है कि हम अपने व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार में भेदभाव को स्थान न दें। पड़ोस, गाँव, नगर और सार्वजनिक जीवन में परस्पर संवाद बढ़ाएँ। मंदिर, जलस्रोत, रमशान और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर किसी के साथ भेदभाव न हो। समाज के वंचित और कमजोर वर्गों के सम्मान, अवसर और न्याय के लिए सक्षम रहें।

समरसता का वास्तविक अर्थ किसी पर उपकार करना नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को समान मानवीय गरिमा के साथ स्वीकार करना है। जब समाज का प्रत्येक वर्ग राष्ट्र की प्रगति में सहभागी बनता है, तब राष्ट्रीय एकता अधिक मजबूत होती है।

2. कुटुंब प्रबोधन : परिवार से संस्कारवान राष्ट्र तक

भारतीय जीवन-दृष्टि में परिवार केवल साथ रहने वाले लोगों का समूह नहीं, बल्कि संस्कार, स्नेह, उत्तरदायित्व और जीवन-मूल्यों की पहली पाठशाला है। बच्चा परिवार से ही सम्मान, सहयोग, अनुशासन, संवेदना और अपने कर्तव्यों का पहला पाठ सीखता है।

आज तेज गति वाले जीवन, डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रभाव और व्यक्तिगत व्यस्तताओं के बीच परिवारों में संवाद और साथ बिताए समय का महत्त्व और बढ़ गया है। ऐसे समय में कुटुंब प्रबोधन का उद्देश्य परिवार को संस्कारों, संवाद और साझा उत्तरदायित्व का जीवंत केंद्र बनाना है।

परिवार के सदस्य साथ बैठें, एक-दूसरे की बात सुनें, बुजुर्गों का सम्मान करें, बच्चों को भारतीय संस्कृति और जीवन-मूल्यों से

परिचित कराएँ तथा महिलाओं की गरिमा और निर्णयों का सम्मान करें। त्योहारों और पारिवारिक परंपराओं को केवल औपचारिकता के रूप में नहीं, बल्कि आपसी संबंध मजबूत करने के अवसर के रूप में मनाएँ।

परिवार में संस्कार का अर्थ केवल उपदेश देना नहीं, बल्कि स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करना है। यदि माता-पिता ईमानदारी का पालन करेंगे, बुजुर्गों का सम्मान करेंगे और समाज के प्रति संवेदनशील रहेंगे, तो नई पीढ़ी भी इन मूल्यों को सहज रूप से अपनाएगी।

भगवान श्रीराम के जीवन में परिवार के प्रति कर्तव्य, माता-पिता के सम्मान और संबंधों की मयार्वा का विशेष स्थान है। इन आदर्शों से प्रेरणा लेकर परिवार को ऐसा केंद्र बनाया जा सकता है, जहाँ प्रेम के साथ उत्तरदायित्व और परंपरा के साथ आधुनिक विवेक का संतुलन हो।

मजबूत परिवार सामाजिक स्थिरता का आधार है। जब परिवार संस्कारवान होंगे, तब समाज में संवेदनशीलता बढ़ेगी और राष्ट्र को जिम्मेदार नागरिक मिलेंगे।

3. पर्यावरण संरक्षण : प्रकृति के प्रति कर्तव्य

भारतीय संस्कृति में प्रकृति को केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार माना गया है। नदियों, वनों, पर्वतों, वृक्षों और जीव-जंतुओं के प्रति सम्मान की परंपरा हमारी सांस्कृतिक चेतना का हिस्सा रही है।

आज जलवायु परिवर्तन, जल संकट, प्रदूषण, प्लास्टिक कचरे और घटती हरियाली जैसी चुनौतियाँ हमारे सामने हैं। इन समस्याओं का समाधान केवल सरकारी योजनाओं से नहीं हो सकता; इसके लिए नागरिकों के व्यवहार में बदलाव भी आवश्यक है।

पंच परिवर्तन के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण का अर्थ है कि प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाया जाए। प्रत्येक व्यक्ति पैधारीोपण करे और लगाए गए पौधों की देखभाल भी सुनिश्चित करे। जल का अपव्यय रोके, वर्षाजल संचयन को प्रोत्साहित करे, एकल-उपयोग प्लास्टिक से बचे और ऊर्जा की बचत करे।

भारतीय जीवन-दृष्टि में प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलने का विचार अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। श्रीराम की वनयात्रा के प्रसंग भी हमें वन, प्रकृति और विविध जीव-जगत से जुड़े जीवन की याद दिलाते हैं।

पर्यावरण संरक्षण का वास्तविक अर्थ केवल एक दिन पौधे लगाना नहीं, बल्कि वर्षों तक उनके जीवित रहने की जिम्मेदारी लेना है। नदियों को स्वच्छ रखना, स्थानीय जलस्रोतों का संरक्षण करना और अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखना भी इसी संकल्प के अंग हैं।

राष्ट्र की प्रगति और प्रकृति की सुरक्षा एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। विकास तभी टिकाऊ होगा, जब उसमें पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियों के हितों का ध्यान रखा जाीगा।

4. स्व का बोध : सांस्कृतिक आत्मविश्वास से स्वदेशी और आत्मनिर्भरता तक

किसी भी राष्ट्र के लिए अपनी सांस्कृतिक पहचान, भाषा, परंपराओं और क्षमताओं के प्रति आत्मविश्वास आवश्यक है। स्व का बोध इसी आत्मविश्वास का विचार है—एसी जीवन-दृष्टि, जिसमें आधुनिकता को अपनाते हुए अपनी जड़ों और सांस्कृतिक विशेषताओं के प्रति सम्मान बना रहे।

स्वदेशी का अर्थ केवल देश में बने उत्पादों को खरीदना नहीं, बल्कि देश की प्रतिभा, उद्यमिता, ज्ञान, तकनीक और उत्पादन क्षमता को प्रोत्साहित करना भी है। जब हम स्थानीय उत्पादों, कारीगरों, किसानों, छोटे उद्योगों और भारतीय उद्यमों को प्रोत्साहन देते हैं, तब देश की अर्थव्यवस्था और रोजगार के अवसर मजबूत हो सकते हैं।

आत्मनिर्भरता का अर्थ दुनिया से कट जाना नहीं है। इसका अर्थ है कि भारत अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता विकसित करे, नवाचार को बढ़ावा दे और वैश्विक सहभागिता में

आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़े। स्व का बोध सांस्कृतिक जीवन में भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। अपनी मातृभाषा का सम्मान करना, भारतीय ज्ञान-परंपराओं को समझना, स्थानीय संस्कृति को जानना और अपनी विरासत को नई पीढ़ी तक पहुँचाना इसके प्रमुख पक्ष हैं।

भगवान श्रीराम की कथा भारतीय समाज के सांस्कृतिक जीवन का महत्त्वपूर्ण आधार है। उनके आदर्शों से प्रेरणा लेने का अर्थ केवल अतीत का स्मरण करना नहीं, बल्कि अपने मूल्यों से शक्ति प्राप्त करके वर्तमान की चुनौतियों का समाधान खोजना भी है।

जब भारत अपनी सांस्कृतिक चेतना, वैज्ञानिक दृष्टि, तकनीकी क्षमता और उद्यमशीलता को साथ लेकर आगे बढ़ेगा, तभी आत्मनिर्भरता का संकल्प अधिक मजबूत होगा।

5. नागरिक कर्तव्य : अधिकारों के साथ जिम्मेदारियों का निर्वहन

लोकतंत्र में अधिकारों का विशेष महत्त्व है, लेकिन अधिकारों की सार्थकता नागरिक कर्तव्यों के निर्वहन से भी जुड़ी है। संविधान का सम्मान, कानून का पालन, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा और

सामाजिक शिष्टाचार का पालन एक जिम्मेदार नागरिक की पहचान हैं।

नागरिक कर्तव्य का अर्थ केवल बड़े अवसरों पर राष्ट्रभक्ति प्रदर्शित करना नहीं, बल्कि रोजमर्रा के जीवन में जिम्मेदार व्यवहार करना है। सड़क पर यातायात नियमों का पालन करना, सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता बनाए रखना, जल और बिजली की बचत करना, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाना और दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना भी राष्ट्रसेवा के ही रूप हैं।

लोकतंत्र में मतदान के अधिकार का विवेकपूर्ण प्रयोग, सामाजिक समस्याओं के समाधान में भागीदारी और कानून के प्रति सम्मान भी नागरिक उत्तरदायित्व का हिस्सा हैं। भगवान श्रीराम के जीवन में कर्तव्य और मयार्वा का जो स्थान है, वह हमें यह समझने की प्रेरणा देता है कि व्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच संतुलन आवश्यक है। एक जिम्मेदार नागरिक केवल अपने हित की चिंता नहीं करता, बल्कि अपने व्यवहार से समाज के हितों की भी रक्षा करता है।

राष्ट्र का निर्माण केवल सरकारों, संस्थाओं या कुछ विशिष्ट व्यक्तियों का कार्य नहीं है। करोड़ों नागरिकों के छोटे-छोटे सकारात्मक प्रयास मिलकर राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करते हैं। जब नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं, तब कानून के शासन, सामाजिक विश्वास और लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूती मिलती है।

पंच परिवर्तन और श्रीराम के आदर्श : विचार से व्यवहार तक

पंच परिवर्तन के पाँचों आयामों को यदि व्यापक दृष्टि से देखें, तो वे केवल सामाजिक कार्यक्रमों की सूची नहीं, बल्कि दैनिक जीवन में अपनाए जा सकने वाले व्यवहारगत संकल्प हैं।

सामाजिक समरसता हमें दूसरों के सम्मान की शिक्षा देती है। कुटुंब प्रबोधन परिवार को संस्कारों और उत्तरदायित्व का केंद्र बनाता है। पर्यावरण संरक्षण हमें प्रकृति के प्रति कर्तव्य याद दिलाता है। स्व का बोध अपनी सांस्कृतिक पहचान और आर्थिक क्षमताओं के प्रति आत्मविश्वास जगाता है। नागरिक कर्तव्य हमें लोकतांत्रिक और सामाजिक जीवन में जिम्मेदार भागीदारी के लिए प्रेरित करता है। इन सभी विषयों में एक साझा सूत्र है—परिवर्तन की शुरूआत स्वयं से होनी चाहिए।

भगवान श्रीराम के आदर्शों का महत्त्व भी तभी व्यापक रूप से सामने आता है, जब वे हमारे आचरण में दिखाई दें। सत्य बोलना, वचन का सम्मान करना, कमजोर के साथ न्याय करना, परिवार के प्रति उत्तरदायी रहना और समाज के हित में कार्य करना—ये ऐसे मूल्य हैं, जो व्यक्ति के जीवन से निकलकर पूरे समाज को प्रभावित कर सकते हैं।

संघ के शताब्दी वर्ष का पंच परिवर्तन का अह्दान भी इसी प्रकार व्यक्ति के व्यवहार से सामाजिक परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। इसकी वास्तविक सफलता इस बात से आँकी जाएगी

कि कितने लोग इन संकल्पों को अपने दैनिक जीवन में अपनाते हैं और उनके माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव लाते हैं।

विजयादशमी का संकल्प : सशक्त व्यक्ति, समरस समाज और गौरवशाली भारत

विजयादशमी हमें हर वर्ष अपने भीतर झाँकने और अपने कर्तव्यों को नए सिरे से समझने का अवसर देती है। भगवान श्रीराम का जीवन मयार्वा और धर्म की प्रेरणा देता है। डॉ. हेडगेवार की संगठन-निर्माण की पहल व्यक्ति-निर्माण और सामूहिक शक्ति के महत्त्व को सामने रखती है। संघ के सौ वर्षों की यात्रा और पंच परिवर्तन का संकल्प इन विचारों को आधुनिक सामाजिक जीवन से जोड़ने का अवसर प्रदान करते हैं।

भारत का भविष्य ऐसा होना चाहिए, जहाँ सांस्कृतिक गौरव आधुनिक विज्ञान और तकनीक के साथ आगे बढ़े; जहाँ सामाजिक एकता भेदभाव से ऊपर उठे; जहाँ परिवारों में संस्कार और संवाद मजबूत हों; जहाँ विकास के साथ पर्यावरण की रक्षा हो; जहाँ स्वदेशी और आत्मनिर्भरता आर्थिक शक्ति का आधार बनें; और जहाँ नागरिक अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी निष्ठापूर्वक निर्वहन करें।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विजयादशमी से जुड़ी स्थापना और उसके शताब्दी वर्ष का पंच परिवर्तन का संकल्प इसी व्यापक राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा हैं। इनका संदेश केवल किसी एक संगठन के कार्यकताओं तक सीमित न रहकर समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचे, तो व्यक्ति और समाज के स्तर पर सकारात्मक बदलाव की संभावनाएँ बढ़ सकती हैं।

अंततः, ‘श्रीराम की विजय का आशीर्वाद है आरएसएस’ एक सांस्कृतिक और वैचारिक अभिव्यक्ति है। इसका वास्तविक आशय भगवान श्रीराम के आदर्शों से प्रेरणा लेकर राष्ट्रजीवन को अधिक अनुशासित, समरस, संवेदनशील और कर्तव्यनिष्ठ बनाने के संकल्प में निहित है।

श्रीराम की मयार्वा हमारे आचरण में हो, सेवा वगैरह कर्म में हो, सामाजिक समरसता हमारे व्यवहार में हो, परिवारों में संस्कार हों, प्रकृति के प्रति संवेदना हो, स्वदेशी के प्रति आत्मविश्वास हो और नागरिक जीवन में कर्तव्य सर्वोपरि हो—तभी विजयादशमी का संदेश व्यापक अर्थों में सार्थक होगा।

विजय केवल रावण के पुतले के दहन में नहीं, बल्कि अपने भीतर के अहंकार और दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करने में है। राष्ट्र का वास्तविक उत्थान तभी संभव है, जब व्यक्ति का चरित्र मजबूत हो, समाज संगठित और संवेदनशील बने तथा प्रत्येक नागरिक राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को समझे।

यही भगवान श्रीराम की विजय का शाश्वत संदेश है। यही संघ के शताब्दी वर्ष के संकल्प को सामाजिक जीवन में उतारने की प्रेरणा है। और यही पंच परिवर्तन के माध्यम से सशक्त, समरस, आत्मनिर्भर तथा गौरवशाली भारत के निर्माण की दिशा है।

सम्पादकीय

एसआईआर का धरातल, प्रशासनिक दावों की जमीनी हकीकत, जनहित की सराहना और व्यवस्था पर तीखा कटाक्ष

देश की लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को सुदृढ़ बनाने और जन–व्यवस्था को पारदर्शी रूप देने के लिए लागू की गई एसआईआर यानी विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण की प्रक्रिया वास्तव में एक अत्यंत साराहनीय और दूरगामी पहल है। इस महत्वाकांक्षी अभियान के माध्यम से योग्य नागरिकों के नाम सूची में जोड़ना, फ़र्जी प्रविष्टियों को हटाना और मतदाता सूची को पूरी तरह त्रुटिरहित बनाना हमारे लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक कदम है। प्रशासन द्वारा डिजिटल तकनीकों का सहारा लेकर घर–घर सत्यापन चलाने और बीएलओ स्तर पर व्यवस्था को आधुनिक बनाने की मंशा निःसंदेह साधुवाद और जन–समर्थन की पात्र है। तथापि इस पूरी व्यवस्था के जमीनी क्रियान्वयन के काले पन्नों को पलटकर देखें तो कागजी दावों और धरातल के कड़वे यथार्थ के बीच एक बहुत बड़ी खाई साफ नज़र आती है। यह किन्ना हास्याप्यद और गंभीर विवेचना है कि जिन जमीनी कर्मचारियों के कंधों पर इस महा–अभियान की सफलता का दारोमदार टिका है वे खुद संसाधनों की भयंकर कमी और सर्वर की सुस्ती से जूझ रहे हैं। अधिकारियों द्वारा एयरकंडीशंड कमरों में बैठकर बड़े–बड़े आंकड़े पेश करना बहुत आसान है किंतु तपती धूप और विषम

परिस्थितियों में भटकने वाले कर्मचारियों का दर्द शायद किसी प्रशासनिक फाइलों में दर्ज नहीं होता। घटना के इस कड़वे और संवेदनशील पहलू पर विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि केवल कागजी लक्ष्य पूरे करने की अंधी दौड़ में आम नागरिकों को दफ़्तरों के चक्कर काटने पर मजबूर होना पड़ता है। कई बार जी–तोड़ मेहनत और सही फॉर्म भरने के बाद भी तकनीक की तकनीकी खामियों के कारण आम जनता के नाम मतदाता सूची से गायब हो जाना हमारी प्रशासनिक उदासीनता पर एक करारा तमाचा है। प्रशासनिक स्तर पर तारीफ़ की बात यह है कि इस बार डिजिटल पोर्टल और मोबाइल ऐप के जरिए पारदर्शिता बढ़ाने की एक अच्छी और आधुनिक कोशिश अवश्य की गई है। तथापि जब तक बुनियादी स्तर पर काम करने वाले अमले को सही प्रशिक्षण, पर्याप्त समय और सुदृढ़ इंटरनेट ढांचा नहीं मिलेगा तब तक सुधार के ये बड़े–बड़े दावे केवल कागजी ढोल बजाने जैसे ही प्रतीत होंगे। आवश्यकता इस बात की है कि सरकार और चुनाव आयोग अपनी कार्यप्रणाली की आत्म–समीक्षा करें ताकि जनहित के इस पवित्र अभियान को केवल खानापूूर्ति बनने से बचाकर वास्तविक अर्थों में सफल बनाया जा सके।

शिव, शक्ति और नवरात्रि की नव आराधना – तन, मन, धन की शुद्धि और जीवन के नवपरिवर्तन

○ डॉ. दीपक गोस्वामी

शिव चेतना हैं, शक्ति ऊर्जा; शिव स्थिरता हैं, शक्ति गति, शिव ध्यान हैं, शक्ति सुजन। शिव और शक्ति का संबंध हमें सिखाता है कि चेतना के बिना ऊर्जा दिशाहीन और विवेक के बिना कर्म अधूरा है। नवरात्रि इसी दिव्य सामंजस्य का उत्सव है। इसकी नौ रातें केवल देवी की आराधना के नौ अवसर नहीं, बल्कि अपने भीतर सोई सद्बुद्धि, साहस, करुणा और कर्मशक्ति को जगाने का आमंत्रण भी हैं। नवरात्रि में हम देवी के समुख दीप जलाते हैं, व्रत रखते हैं, मंत्र जपते हैं और अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं। किंतु एक प्रश्न आत्ममंथन के लिए आवश्यक है—क्या आराधना के बाद हमारे आचरण में भी कोई प्रकाश उतरता है? यदि पूजा के पश्चात भी व्यवहार में छल, विचारों में ईर्ष्या और कर्माई में बेईमानी बनी रहे, तो साधना का सामाजिक उद्देश्य अधूरा रह जाता है। देवी की सच्ची वंदना तभी सार्थक होती है, जब श्रद्धा सदाचार बने और भक्ति लोकमंगल का आधार बने।

नवदुर्गा के नौ स्वरूपों को तन, मन और धन की शुद्धि से जोड़कर देखने पर नवरात्रि जीवन सुधारने की व्यावहारिक साधना बन जाती है। यह विभाजन आध्यात्मिक चिंतन की एक व्याख्या है, परंपरिक शास्त्रीय वर्गीकरण का अनिवार्य नियम नहीं। इसके माध्यम से हम समझ सकते हैं कि शरीर का अनुशासन, मन का परिष्कार और धन का सदुपयोग मिलकर व्यक्ति के जीवन को कैसे बदल सकते हैं। शैलपुत्री दृढ़ता की प्रेरणा देती हैं। पर्वत की भाँति स्थिर रहना, स्वास्थ्य का ध्यान रखना और अपने कर्तव्यों से न भागना तन की शुद्धि का पहला सोपान है। शरीर केवल भोग का साधन नहीं, बल्कि सेवा, साधना और कर्म का माध्यम है। संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद और नशे से दूरी इसी आराधना के व्यावहारिक रूप हैं। ब्रह्मचरिणी तप, संयम और अनुशासन का संदेश देती हैं। इंद्रियों पर विवेकपूर्ण नियंत्रण, समय का सदुपयोग और लक्ष्य के प्रति निष्ठा समय को भीतर से दृढ़ बनाते हैं। संयम का अर्थ जीवन से आनंद मिटाना नहीं, बल्कि

इच्छाओं को विवेक के अधीन रखना है। चंद्रघंटा निर्भयता और सजगता की प्रेरणा देती हैं। भय, आलस्य और निराशा पर विजय पाकर ही मनुष्य अपने सामर्थ्य को पहचानता है। इस प्रकार प्रथम तीन स्वरूप तन को स्वस्थ, अनुशासित और कर्मयोग्य बनाने की प्रेरणा देते हैं। कुम्भांडा सुजन और जीवन की सकारात्मक स्थानाओं का बोध करती हैं। मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही अपने व्यवहार और निर्णयों को दिशा देने लगता है। इसलिए मन की शुद्धि की शुरुआत विचारों की शुद्धि से होती है। नकारात्मकता, ईर्ष्या और निरर्थक तुलना के स्थान पर आशा, कुतूहल और रचनात्मकता को अपनाना आवश्यक है। स्कंदमाता ममता, प्रेम और उत्तरदायित्व की प्रतीक हैं। उनका संदेश है कि परिवार केवल स्रष्टा रहने से नहीं, बल्कि एह–ए–दूसरे को समझने, सम्मान देने और कठिन समय में सहारा बनने से बनता है। माता–पिता, संतान, मित्र और समाज के प्रति संवेदनशीलता मन को उदार बनाती है। कायायनी अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का साहस देती हैं। मन की

निर्मलता का अर्थ अन्याय देखकर मौन रहना नहीं, बल्कि सत्य और न्याय का पक्ष विवेकपूर्ण

270 स्वयंसेवकों का स्वच्छता संग्राम, संतरेगा ब्रज धाम!

स्वीटी बाय एमआर ग्रुप का भव्य सेवा महोत्सव, ब्रज में गूंजेगा राम नाम!

सफाई के साथ नुक्कड़ नाटक से दिया स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण का संदेश



टीएनएफ टुडे ब्यूरो, मथुरा।

ब्रज की धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने के उद्देश्य से गोवर्धन स्थित ऐरावत कुंड पर ह्ब्रज वैभव अभियानह्ब के अंतर्गत स्वच्छता सेवा आयोजित की गई। उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद, जिला प्रशासन, नगर निगम एवं हाटफुलनेस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस अभियान में लगभग 270 स्वयंसेवकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। अभियान के अंतर्गत स्वयंसेवकों ने ऐरावत कुंड एवं आसपास के क्षेत्र में स्वच्छता सेवा करते हुए कचरा एकत्र किया। साथ ही, नुक्कड़ नाटक के माध्यम से स्वच्छता के प्रति जन-जागरूकता फैलाते हुए श्रद्धालुओं एवं स्थानीय लोगों को सार्वजनिक

- ब्रज की विरासत संवारने उठते 270 स्वयंसेवक, ऐरावत कुंड पर चलाया स्वच्छता अभियान
- नुक्कड़ नाटक से श्रद्धालुओं को दिया संदेश, धार्मिक स्थलों को स्वच्छ रखने की अपील
- स्वच्छता से पर्यावरण संरक्षण तक की पहल, ब्रज को सुंदर बनाने का लिया संकल्प

और धार्मिक स्थलों को स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित किया गया। इस अभियान में मथुरा, आगरा, अलीगढ़, गाजियाबाद, मेरठ, गुरुग्राम, भरतपुर, डींग, झालास, कान्हा, खैर, हाथरस, टप्पल, सरसा, जयपुर, कोटा, अभैदेपुरा, सवाई माधोपुर, भोपाल, हैदराबाद, राजगढ़, अलवर एवं बहज सहित विभिन्न केंद्रों से आए अथ्वासी एवं

स्वयंसेवक शामिल हुए।ह्ब्रज वैभव अभियानह्ब के माध्यम से स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण एवं जन-जागरूकता के कार्यक्रमों द्वारा ब्रज की पवित्रता और प्राकृतिक सुंदरता बनाए रखने तथा स्थानीय समुदाय में स्वच्छता के प्रति जिम्मेदारी एवं स्वामित्व की भावना विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है। हाटफुलनेस एक वैश्विक आध्यात्मिक संस्था है, जो ध्यान एवं योग के माध्यम से आंतरिक शांति और आत्म-विकास को प्रोत्साहित करती है। इसके वैश्विक मार्गदर्शक परम पूज्य दाजी, श्री कमलेश डी. पटेल जी, पद्म भूषण से सम्मानित आध्यात्मिक मार्गदर्शक हैं, जो सेवा, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को बढ़ावा देते हैं।

मुठभेड़ में गैंग के दो बदमाश दबोचे, नकदी-हथियार बरामद!

टीएनएफ टुडे ब्यूरो, मथुरा।

रिफाइनी पुलिस टीम ने बाद पुल के पास से दो अपराधिक प्रवर्ति के लोगों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार थाना रिफाइनी जनपद मथुरा से प्रकाश में आये अभियुक्तगण सुधीर पुत्र सियाराम निवासी गाँव नहरैया पोस्ट रेवाड़ी थाना बकेवर जिला इटावा उम्र करीब 32 वर्ष व साहिल उर्फ लालू पुत्र रामदत्त उर्फ चन्द्रप्रकाश निवासी गाँव खितोरा थाना बकेवर जिला इटावा उम्र करीब 34 वर्ष सम्बन्धित मु0अ0सं0 333/2026 धारा 331(4)/305(अ) बी0एन0एस0 को गिरफ्तार कर लिया। अभियुक्तगणों से चोरी के माल में रुपये 99500/- , 01 गैस सिलेण्डर, 02 लुमिनस बैटरी, 02 अवैध तमचे ,.315 बोर, 04 जिन्दा कारतूस ,.315 बोर, नाल में फसे 02 खोखा कारतूस ,.315 बोर, 02 खोखा कारतूस ,.315 बोर व घटना में प्रयुक्त एक औरा कार रजिस्ट्रेशन नम्बर वढ 75 ज्ड 0953 सहित गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारशुदा अभियुक्तों के विरुद्ध थाना रिफाइनी से आवश्यक विधिक कार्यवाही की गई। पुलिस के अनुसार वादी पवन

- पुलिस फर फायरिंग के बाद दोनों आरोपी गिरफ्तार
- दो तमचे, कारतूस, बैटरी और गैस सिलेण्डर बरामद
- एक आरोपी फर दर्ज है 24 आपराधिक मुकदमें

कुमार पुत्र पुरन सिंह हाल निवासी 14 किशन वाटिका कलोनो निकट पुष्पांजली द्वारा 12 अक्टूबर को थाने पर एक प्रार्थना पत्र दिया, जिसमें अज्ञात चोर द्वारा वादी के घर से नगद धनराशि एवं कुछ आभूषण तथा 01 सिलेन्डर एवं बैटरी आदि सामान चोरी कर लिये हैं उक्त सूचना के आधार पर थाना रिफाइनी पर मु0अ0सं0 333/2026 धारा 331(4)/305(अ) बी0एन0एस0 पंजीकृत कर सीसीटीवी फुटेज के आधार पर अभियुक्तगणों की पहचान की गयी। दौराने मुठभेड़ अभियुक्तगण द्वारा पुलिस पार्टी पर की गई फायरिंग के सम्बन्ध में थाना रिफाइनी पर मु0अ0सं0 342/2026 धारा 109(1)/3(5) बी0एन0एस0 (पु0मु0) व 3/25/27 आर्म्स एक्ट पंजीकृत कर अभियुक्त के विरुद्ध आवश्यक विधिक कार्यवाही की गई।

शुगर मिल धरने पर प्रशासन सख्त, पुतला दहन पर रोक

टीएनएफ टुडे ब्यूरो, मथुरा।

- धरना खत्म कर जगह खाली करने का फिर नोटिस
- 20 अक्टूबर को प्रस्तावित पुतला दहन की अनुमति नहीं
- हाईवे जाम और कानून-व्यवस्था बिगड़ने की आशंका जताई

उप जिला मजिस्ट्रेट छाता अखिलेश कुमार ने अगगत कराया गया है कि छाता शुगर मिल को पुनः संचालित कराय जाने की मांग को लेकर कुछ व्यक्तियों द्वारा शुगर मिल परिसर के बाहर विगत कई दिनों से धरना-प्रदर्शन किया जा रहा है। धरना समाप्त करने तथा धरना स्थल खाली करने के संबंध में पूर्व में कई बार नोटिस जारी किए जाने के बावजूद धरना जारी रखा गया है। उक्त प्रकरण में संबंधित व्यक्ति ललित कुमार कर्मयोगी को पूर्व में जारी नोटिसों के माध्यम से धरना-प्रदर्शन समाप्त करने एवं धरना स्थल खाली करने के निर्देश दिए गए थे। इसके बावजूद 20 अक्टूबर, 2026 को छाता शुगर मिल परिसर में सांकेतिक पुतला दहन कार्यक्रम आयोजित किए जाने की सूचना दी गई है। प्रशासन द्वारा स्पष्ट किया गया है कि इस प्रकार के कार्यक्रमों में अग्नि प्रज्वलन,

हत्या के प्रयास का वांछित आरोपी दबोचा।

मथुरा। थाना मगोर्रा पुलिस टीम द्वारा मुखबि की सूचना पर फोंडर से आगे पुलिया के पास थाना क्षेत्र मगोर्रा जनपद मथुरा से हत्या के प्रयास के अभियोग में वांछित चल रहे अभियुक्त को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार अभियुक्त नेतराम पुत्र शिवचरण निवासी अहमल थाना मगोर्रा जनपद मथुरा उम्र करीब 32 वर्ष, संबधित मु0अ0सं0 278/2026 धारा 115(2)/352/109(1) बी0एन0एस0 थाना मगोर्रा जनपद मथुरा को पकड़ लिया गिरफ्तारशुदा अभियुक्त के विरुद्ध थाना मगोर्रा जनपद मथुरा से आवश्यक विधिक कार्यवाही की गई।



जलधारा—चंबल, यमुना, सिंध, पहुज जी और ववारी—से जुड़े क्षेत्र से भी सेवा यात्रियों को जल प्रदान किया गया। यह क्षण यात्रा के ह्रजलह्र भाव को और गहरा करने वाला रहा। कालपी, बौधघाट और जालौन क्षेत्र में गौसेवा, पौधापोषण, जनचौपाल और जनसंवाद जैसे कार्यक्रम हुए। स्थानीय कार्यकर्ताओं—उर्विंजा दीक्षित, लकी त्रिपाठी, प्रशांत द्विवेदी, विवेक कुशवाहा, शिवेंद्र सहित अनेक साथियों—का सहयोग यात्रा की व्यवस्था में महत्वपूर्ण रहा। बंगरा से होते हुए गोपालपुरा सीमा से यात्रा मध्यप्रदेश की ओर आगे बढ़ी।

मध्यप्रदेश — सेवा का विस्तार मध्यप्रदेश में प्रवेश लहार विधानसभा क्षेत्र से हुआ। रावतपुरा सरकार आश्रम में रात्रि विश्राम, हनुमान जी के दर्शन और पूजन का अवसर मिला। यहाँ प्रधानमंत्री जी के कार्यक्रम का लाइव प्रसारण देखा गया तथा गौसेवा और संत सम्मान का कार्यक्रम हुआ। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भाजपा श्री लाल सिंह आर्य जी,



पौधापोषण और जनसंवाद हुआ। बड़ी संख्या में महिलाओं, पुरुषों और छात्राओं ने कार्यक्रम में सहभागिता की। बैराड़ बाजार और पोहरी में स्थानीय कार्यकर्ताओं एवं जनप्रतिनिधियों ने यात्रियों का सम्मान किया। सांसद भारत सिंह कुशवाहा जी, पूर्व मंत्री सुरेश धाकड़ जी, जिला प्रभारी दिलीप मुडगल जी, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य विजय शुक्ला जी सहित स्थानीय कार्यकर्ताओं का सहयोग मिला। श्योपुर में गौशाला में गौसेवा एवं पूजन, भाजपा जिला कार्यालय में जनसंवाद, सेवा यात्रियों का सम्मान, शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय में 76 पौधों का पौधापोषण, जिला चिकित्सालय में मरीजों एवं तीमारदारों को फल वितरण तथा भगवान बिरसा मुंडा छात्रावास के खिलाड़ियों से युवा संवाद किया गया। शहीद स्मारक पर स्वच्छता और दीपावत्सव के माध्यम से वीर शहीदों को नमन किया गया। रात्रि में नीनार साम सरकार के भक्ति एवं

देशभक्ति गीतों ने पूरे वातावरण को भावपूर्ण बना दिया। आशीर्वाद लेकर यात्रा अगले पड़ाव की ओर रवाना हुई। राजस्थान — लाखेरी और बुंदी मध्यप्रदेश से आगे बढ़ते हुए यात्रा राजस्थान के लाखेरी, बुंदी क्षेत्र में पहुंची। यहाँ जनसंवाद के दौरान नशामुक्ति और रोजगार जैसे सामाजिक विषयों पर भी लोगों से चर्चा हुई। एक समय संचालित रही सीमेंट फैक्ट्री के बंद होने से रोजगार पर प्रभाव और स्थानीय युवाओं की परिस्थितियों को समझने का अवसर मिला। यात्रा में केवल मंवीय कार्यक्रम नहीं, बल्कि स्थानीय समाज की वास्तविक परिस्थितियों को समझना भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा। गुजरात की ओर — सेवा से साधना तक राजस्थान से आगे बढ़ते हुए यात्रा गुजरात की सीमा में प्रवेश करती है। गुजरात में पहुंचना इस यात्रा के लिए विशेष भावनात्मक क्षण था, क्योंकि यात्रा का अंतिम उद्देश्य काशी की कर्मभूमि से वडनगर की जन्मभूमि तक सेवा और आस्था का संदेश पहुंचाना था। साबरकांठा क्षेत्र में प्रदेश के दौरान स्थानीय कार्यकर्ताओं और नागरिकों से मिले स्नेह ने यात्रियों का उत्साह बढ़ाया। सीमा क्षेत्र में गुजरात और उत्तर प्रदेश के बीच एक भावनात्मक सेतु का अनुभव हुआ। यात्रा के गुजरात चरण में ईडर विधानसभा के हाथरवा में स्वच्छता अभियान किया गया। इसके बाद दोभाड़ा में जनसंवाद आयोजित हुआ। आगे सतलशना अस्पताल में मरीजों को

फल वितरित किए गए, आयुष्मान कार्ड से जुड़े लाभार्थियों को कार्ड वितरित किए गए और आयुष्मान कार्ड धारकों से संवाद किया गया। यहाँ यात्रा का मूल भाव साफ दिखाई दिया—सेवा केवल कार्यक्रम नहीं, बल्कि जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचने का माध्यम है। गुजरात — अंतिम चरण गुजरात में यात्रा के दौरान वाव क्षेत्र में पशुपालक समाज से संवाद हुआ। स्थानीय जीवन, पशुपालन और ग्रामीण परिस्थितियों को समझने का अवसर मिला तथा साथियों के साथ भोजन और विश्राम का पड़ाव रहा। इसके बाद खेरालू में पुराने सरकारी अस्पताल के आसपास स्वच्छता अभियान चलाया गया और श्रीकृष्ण मंदिर के दर्शन किए गए। यात्रा आगे बढ़ते हुए वडनगर पहुंची। वडनगर — संकल्प की पूर्णता वडनगर पहुंचना पूरे यात्रा-वृत्त का सबसे भावपूर्ण पड़ाव रहा। काशी से साथ लेकर चला गया पवित्र जल लेकर श्री हाटकेश्वर महादेव मंदिर पहुंचना केवल यात्रा का अंतिम कार्यक्रम नहीं था, बल्कि काशी और वडनगर के बीच एक आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक संबंध की अनुभूति थी। काशी की कर्मभूमि से वडनगर की जन्मभूमि तक पहुंची यह यात्रा सेवा, संस्कृति, जनसंवाद और राष्ट्रभाव को जोड़ने का प्रयास बनी। अभियान की मूल योजना के अनुसार काशी से जाने वाले सेवा यात्री उत्तर प्रदेश की पवित्र नदियों का जल वडनगर में हाटकेश्वर महादेव

को अर्पित करने वाले थे। इस यात्रा ने क्या दिया? लगभग तीन सप्ताह की इस यात्रा में सड़के बदलीं, रात्र्य बदले, भाषाएँ बदलीं, भोजन बदला, मौसम बदला और लोगों के रहन-सहन के तरीके बदले—लेकिन सेवा का भाव नहीं बदला। उत्तर प्रदेश से मध्यप्रदेश, मध्यप्रदेश से राजस्थान और राजस्थान से गुजरात तक हर जगह एक नया अपनापन मिला। कहीं स्वच्छता की, कहीं पौधापोषण की, कहीं गौसेवा की, कहीं अस्पताल में मरीजों की सेवा की, कहीं युवाओं से संवाद किया, कहीं लाभार्थियों से बातचीत हुई और कहीं स्थानीय समस्याओं को करीब से समझने का अवसर मिला। इस यात्रा ने यह अनुभव कराया कि भारत की विविधता के बीच सेवा एक ऐसी भाषा है जिसे हर व्यक्ति समझता है। और व्यक्तिगत रूप से यह यात्रा मेरे लिए केवल एक संगठनात्मक जिम्मेदारी नहीं रही। मैंने पेर चलने का संकल्प, साथियों की व्यवस्था, सेवा का भीम में सहभागिता, रास्ते की कठिनाइयों, साथियों की हसी-मजाक, अनुशासन और हर पड़ाव पर मिले नए रिश्ते—इन सबने इसे एक आध्यात्मिक, सामाजिक और आत्मीय अनुभव बना दिया। अंतिम भाव काशी से वडनगर तक का सफर समाप्त हुआ है, लेकिन सेवा का संकल्प समाप्त नहीं हुआ। यात्रा के पड़ाव पीछे छूट गए हैं, मगर हर पड़ाव का स्मृतिवर्ष, हर व्यक्ति का स्नेह और हर साथी का सहयोग जीवन भर साथ रहेगा।

- हीरक जयंती एर संत सेवा और सांस्कृतिक आयोजनों की मध्य तैयारी
- गोवर्धन, बरसाना और श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर सजेगा फूल बंगला
- वृंदावन में भगवान श्रीराम के आदर्शों पर आधारित होला ‘हमारे राम’ का मंचन

विशेष पोशाक धारण कराई जाएगी तथा भव्य व अलौकिक फूल बंगला दर्शन का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि ?जनकल्याण की भावना को प्राथमिकता देते हुए आयोजनों की शुरुआत 18 अक्टूबर को गोवर्धन स्थित ग्रीन वैली में आयोजित एक विशाल निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर से की गई। प्रेस वार्ता के दौरान समूह के चेयरमैन सुनील कुमार अग्रवाल ने भावुक होते हुए बताया कि उनके

पिता स्व. सुरेश चंद्र अग्रवाल एक दूरदर्शी उद्यमी, कर्मठ और सिद्धांतों के पक्के इंसान थे। उन्होंने सीमित संसाधनों के साथ अपनी व्यावसायिक यात्रा शुरू की और अपनी अथक मेहनत, ईमानदारी व हठ विश्वास के बल पर स्वीटी समूह को उद्योग जगत में एक विशिष्ट पहचान दिलाई। व्यापार के साथ-साथ पारिवारिक संस्कार, धार्मिक आस्था और मानवीय मूल्यों के प्रति उनका समर्पण हमेशा अनुकरणीय रहा। वर्तमान में उनके इन आदर्शों, सेवा-परंपरा और विरासत को पौत्र एवं मैनेजिंग डायरेक्टर लव कुमार बंसल आगे बढ़ा रहे हैं। हीरक जयंती समारोह को ऐतिहासिक और स्मरणीय बनाने में विश्व हिंदू परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष एवं परिवार के वरिष्ठ सदस्य कन्हैयालाल अग्रवाल का विशेष सहयोग है।

सपा नेता ने दुष्कर्म और 40 लाख रुपए की वसूली के आरोप को बताया निराधार

मथुरा। समाजवादी पार्टी अधिवक्ता संघ के राष्ट्रीय सचिव रहे राजेंद्र फेरारी एडवोकेट ने अपने ऊपर दुष्कर्म और 40 लाख रुपए की वसूली के आरोप को पूरी तरह निराधार बताते हुए कहा है कि मुकदमा दर्ज कराने वाली युवती ने मेरे ऊपर क्रॉस मुकदमा दबाब बनाने के लिए झूठी एफ आई आर दर्ज करवायी है। उसका पैसों और जमीन को लेकर मेरे से विवाद चल रहा था जिसके संबंध में मैंने इसके खिलाफ दो एफआईआर दो महीने पहले दर्ज करवायी थी और दो सिविल केस भी इसके खिलाफ किये हैं। अब उनको वापस लेने और मेरा 50 लाख रू वापस न देने के दबाब में वे मुकदमा मेरे खिलाफ साजिशना मेरी सामाजिक छवि खराब करने के लिए दो साल पहले की घटना बना के लिखवाया गया है। युवा सपा नेता राजेंद्र फेरारी का कहना है कि इसके खिलाफ कई मुकदमे पहले से ही दर्ज हैं। उनका कहना है कि उनके ऊपर आरोप लगाने वाली युवती ने एक फर्जी विकलांग प्रमाण पत्र बनवा रखा है उसका फायदा जमीनों में रजिस्ट्री के लिए स्टाम्प छूट में लेती रहती है। इसके प्रमाण पत्र की जांच भी मथुरा सीएमओ कर रहे हैं। सपा नेता राजेंद्र सिंह उर्फ राजेंद्र फेरारी ने बताया कि 2 जुलाई 26 को इसने थाना प्रभारी सदर बाजार को एक शपथ पत्र दिया था जिसमें कहा था कभी कोई भी आरोप भविष्य में वह उन पर नहीं लगाएगी। उनका कहना है कि यह सब मेरे रुपए पैठने के कारण शृङ्खर रचा गया है।

तेज रफ्तार पिकअप का कहर, 18 वर्षीय बाइक सवार गंभीर घायल

सहावर। सोमवार की सुबह एक दर्दनाक सड़क हादसे में बाइक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। तेज रफ्तार मैक्स पिकअप ने पीछे से उसकी बाइक में जोरदार टक्कर मार दी, जिससे वह सड़क पर गिरकर लहलुहान हो गया। परिजनों द्वारा उसे तुरंत जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। कल्याणपुर निवासी हरदेव सिंह के 18 वर्षीय पुत्र शिवम सोमवार सुबह करीब 7 बजे किसी कार्य से अपनी बाइक से जा रहे थे। इसी दौरान सहावर थाना क्षेत्र के अंतर्गत पीछे से आ रही एक अनियंत्रित मैक्स पिकअप ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे की सूचना मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। घायल युवक को बहन डोली ने रोते-बिलखते हुए बताया कि दुर्घटना के बाद परिजनों ने आनन-फानन में शिवम को जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों की देखरेख में उसका इलाज जारी है।

आठवीं की छात्रा बनी एक दिन की थाना प्रभारी, जानी पुलिस की कार्यप्रणाली

टीएनएफ टुडे ब्यूरो, सैंया।

मिशन शक्ति अभियान के तहत बालिकाओं में आत्मविश्वास बढ़ाने और उन्हें पुलिस की कार्यप्रणाली से परिचित कराने के उद्देश्य से सैंया थाने में कुनाल इंटर कॉलेज की कक्षा आठ की छात्रा यशस्वी शुक्ला को एक दिन के लिए थाना प्रभारी बनाया गया। यशस्वी शुक्ला, नगला मौहरे निवासी अनुपम शुक्ला की पुत्री हैं। एक दिन की थाना प्रभारी बनने पर छात्रा को थाने का भ्रमण कराया गया और पुलिस के विभिन्न कार्यों की जानकारी दी गई। इस दौरान उसे डाक कार्यालय, कंप्यूटर कक्ष, जीडी कार्यालय और मिशन शक्ति केंद्र की कार्यप्रणाली से अवगत कराया गया। छात्रा को थाने में रखे जाने वाले विभिन्न रजिस्टरों के रखरखाव और उनके उपयोग की जानकारी भी दी गई। इसके साथ ही मिशन शक्ति केंद्र पर उपलब्ध



स्मार्टफोन और चार रजिस्टरों के उपयोग एवं महत्व के बारे में समझाया गया। पुलिसकर्मियों ने क्षेत्र का भ्रमण करारकर पुलिस की जिम्मेदारियों और कार्यशैली से भी परिचित कराया।इस पहल का उद्देश्य बालिकाओं में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और जागरूकता विकसित करना है, ताकि वे अपने अधिकारों को समझ सकें और भविष्य में किसी भी परिस्थिति का मजबूती से सामना कर सकें। मिशन शक्ति अभियान के माध्यम से पुलिस महिलाओं और बालिकाओं को सुरक्षा, सम्मान तथा उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने का प्रयास कर रही है।

काशी से वडनगर तक सेवा, साधना और संकल्प की यात्रा

सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत काशी से वडनगर तक निकली माँ बेतावा सेवा यात्री — रूट संख्या 20 केवल एक बाइक यात्रा नहीं रही। यह यात्रा उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान और गुजरात की धरती को जोड़ते हुए सेवा, जनसंवाद, जनभागीदारी, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, गौसेवा और सामाजिक सरोकारों को जन-जन तक ले जाने का माध्यम बनी। 17 सितंबर 2026 को काशी से इस यात्रा का शुभारंभ हुआ। अभियान की व्यापक योजना के अंतर्गत देशभर में 20 यात्राएँ निकलीं और लगभग 35,500 किलोमीटर की यात्रा, 193 जिलों, 773 तहसीलों तथा 1,159 गांवों तक पहुंचने का लक्ष्य रखा गया। काशी से निकलने वाली यात्राओं के मार्गों को पवित्र नदियों के नाम दिए गए थे, जिनमें माँ बेतावा भी एक थी। काशी से संकल्प की शुरुआत काशी की पारन धरती से यात्रा प्रारंभ करने से पहले बाबा विश्वनाथ का आशीर्वाद लिया गया और माँ गंगा का जल साथ लेकर वडनगर तक पहुंचाने का संकल्प लिया गया। यात्रा का मूल भाव था— जल — आस्था को जोड़ने के लिए जन — लोगों से सीधे संवाद के लिए सेवा — हर पड़ाव पर कुछ ठोस करने के लिए संकल्प — सेवा को राष्ट्र निर्माण से जोड़ने के लिए। यात्रा के दौरान हर पड़ाव पर केवल स्वागत और कार्यक्रम तक सीमित न रहकर स्वच्छता, पौधापोषण, गौसेवा, मरीजों की सेवा, लाभार्थी संवाद, युवा

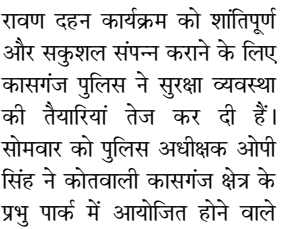
संवाद, नशामुक्ति और जनजागरूकता जैसे सेवा कार्यों को प्राथमिकता दी गई। अभियान की घोषित गतिविधियों में पौधापोषण, स्वच्छता, जल संरक्षण, प्लास्टिक-मुक्त जागरूकता और नशामुक्ति जैसे कार्य भी शामिल थे। उत्तर प्रदेश — गांव, चौपाल और सेवा के पड़ाव काशी से आगे बढ़ते हुए यात्रा ने उत्तर प्रदेश के अनेक गांवों, कस्बों और विधानसभा क्षेत्रों को जोड़ा। प्रयागराज क्षेत्र में गंगा स्नान, लेटे हनुमान जी के दर्शन और सेवा गतिविधियों के साथ यात्रा आगे बढ़ी। रास्ते में स्थानीय कार्यकर्ताओं और जनप्रतिनिधियों ने यात्रियों का स्वागत किया और अनेक स्थानों पर जनसंवाद आयोजित हुए। निमहारा माता मंदिर, सैदाबाद-हंडिया में स्वच्छता अभियान चलाया गया तथा स्वच्छता कर्मियों का सम्मान किया गया। यात्रा के प्रत्येक पड़ाव पर यह प्रयास रहा कि स्वागत के साथ कोई न कोई सेवा कार्य भी हो। आगे चायल-तिहापुर मोड़, कोशांबी क्षेत्र में जनप्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं के साथ संवाद एवं स्वागत हुआ। इसके बाद यात्रा फतेहपुर, जहानाबाद, घाटमपुर, भोगनीपुर, कालपी और जालौन की ओर बढ़ी। जालौन — सेवा और जनचौपाल जालौन क्षेत्र में कमसेरा, माधीगढ़ विधानसभा में जनचौपाल और लाभार्थी संवाद हुआ। स्थानीय नेतृत्व और कार्यकर्ताओं ने यात्रा का स्वागत किया। यात्रा के दौरान पंचनदा की पवित्र

वन को चले राम रघुराई, संग में सीता और लघु भाई

हवन-यज्ञ के साथ साथ अपने बच्चों के मुर्डेन व जनेऊ संस्कार भी कराए। इसके बाद आरती व दुर्गा चालीसा के पाठ के साथ ही अज्ञारी पूजन कर मां महागौरी से जीवन की बाधाएं दूर करने का आशीर्वाद मांगा। इसके अलावा घरों में कन्या पूजन के साथ के मां की आराधना की गई।

शारदीय नवरात्रि के अंतिम दिन जनपद कासगंज में महा नवमी का पर्व श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। कासगंज शहर, तीर्थ नगरी सोनरी, सहावर, गंजडुबारा, पटौयाली और सिद्धपुरा सहित विभिन्न कस्बों में भक्तिमय माहौल रहा। सुबह से ही घरों में मां दुर्गा के नौवें स्वरूप मां सिद्धिदात्री की पूजा-अर्चना की गई।

महा नवमी के अवसर पर श्रद्धालुओं ने घर-घर का सत्कार पूजन किया। कन्याओं को मां दुर्गा का स्वरूप मानकर उनके चरण धोए गए, तिलक लगाया गया और विधि-विधान से भोजन कराकर दक्षिणा एवं उपहार भेंट किए गए। इसके बाद श्रद्धालुओं ने कन्याओं का आशीर्वाद लेकर अपने व्रत का पारयण किया। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, मां सिद्धिदात्री की आराधना करने से भक्तों को सुख-समृद्धि, शांति और सिद्धियों की प्राप्ति होती है। नवरात्रि के अंतिम दिन मंदिरों और घरों में पूजा-पाठ के साथ धार्मिक उत्साह देखने को मिला। श्रद्धालुओं ने मां दुर्गा से प्रसिवादी सुख-शांति, समृद्धि और खुशहाली को कामना की। महा नवमी के साथ ही नौ दिवसीय शारदीय नवरात्रि का समापन भक्तिमय वातावरण में हुआ।

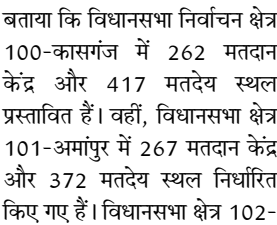


ने कहा कि सार्वजनिक आयोजनों के दौरान पुलिससकमी सतर्क कृष्टि बनाए रखे, ताकि किसी भी अभियन्स्थिति से सम्बन्ध रहते निपट्टा जल स्रस्त्र और कार्यक्रम शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो। निरीक्षण के दौरान अपरपुलिस अधीक्षक आलोक कुमार, क्षेत्राधिकारी नगर आंचल चैहान, प्रभारी निरीक्षक कोतवाली कासगंज जमश्या चंद्र सहित अन्य पुलिसकमी मौजूद रहे। कासगंजपुलिस ने नागरिकों से अपील की है कि रावण दहन कार्यक्रम के दौरान पुलिस प्रप्त प्रासन के दिशा-निर्देशों का पालन करें तथा शांति, सौहार्द और कानून-व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करें। पुलिस प्रासन ने स्पष्ट किया कि त्योहारों और सार्वजनिक आयोजनों के दौरान सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं।

कासगंज। कल्याण कोरॉति नेत्र संस्थान गोवर्धन रोड जचैदा ने थियोब्रोमा आर हेल्पएज इंडिया के सहयोग से नेत्र चिकित्सा शिविर लगाया गया। शिविर नगर पालिका परिसर में संपन्न हुआ। इस दौरान 101 मरीजों ने पंजीकरण कराया। वरिष्ठ चिकित्सकों पंजीकृत सभी मरीजों के नेत्रों का परीक्षण किया। इस दौरान 10 मरीज मोतियाबिंद से पीड़ित मिले। जिन्हें निशुल्क आपरेशन के लिए कल्याण कोरॉति नेत्र चिकित्सा संस्थान गोवर्धन रोड जचैदा भेज दिया गया। शिविर में डा. अनुभव उपाध्याय, कॉर्डिनेटर पंकज, राज, पवन समेत अन्य मौजूद रहे।

कासगंज। गंजडुंडवारा कोतवाली पुलिस ने क्षेत्र से एक आरोपी को तमंचा, कारतूस समेत गिरफ्तार किया है। आरोपी के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस ने अग्रिम कार्रवाई की है। गंजडुंडवारा कोतवाली प्रभारी हवीम कुमार गोस्वामी ने बताया कि कोतवाली पुलिस ने रईस बाबू पुत्र चम्बन निवासी सुजवलपुर को डेपाली बाईपास पर खिचिंग पुल के पास से गिरफ्तार किया है। उसके कब्जे से पुलिस ने एक तमंचा, दो कारतूस बरामद किए हैं।

जनपद में विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों के मतदेय स्थलों के सम्भाजन एवं समायोजन की प्रक्रिया पूरी होने के बाद आलेख्य सूची का प्रकाशन कर दिया गया है। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जनवरी 2027 के आधार पर होने वाले विशेष संधिखन पुरोक्षण से पूर्व यह प्रक्रिया पूरी की गई है। जनपद की तीनों विधानसभा क्षेत्रों में कुल 806 मतदान केंद्र और 1190 मतदेय स्थल प्रस्तावित किए गए हैं।



- जिले में 806 मतदान केंद्र और 1190 मतदेय स्थल प्रस्तावित।
- कासगंज विधानसभा में 417 मतदेय स्थल निर्धारित।
- अमापुर में 372 और पटियाली में 401 मतदेय स्थल प्रस्तावित।

पटियाली में 277 मतदान केंद्र और 401 मतदेय स्थल प्रस्तावित किए गए हैं। उन्होंने बताया कि मतदेय स्थलों की आलेख्य सूची अनुलग्नक-1 के तहत जिला निर्वाचन कार्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है। इसके अलावा संघीयता तहसीलों के जग जिलाधिकारी कार्यालयों और जिला निर्वाचन

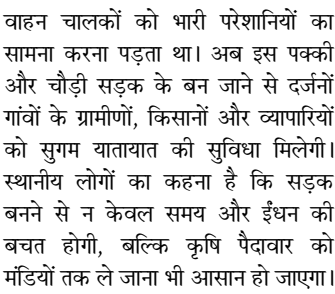
कार्यालय, कासगंज में भी सूची का अवलोकन किया जा सकता है। उप-जिला निर्वाचन अधिकारी ने जनपद के नागरिकों, जनप्रतिनिधियों और मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों से अपील की है कि वे प्रस्तावित सूची का अवलोकन कर लें। यदि किसी मतदेय स्थल के संबंध में कोई आपत्ति या सुझाव हो, तो उसे तीन दिवस के अंदर संबंधित तहसील के उप-जिला अधिकारी कार्यालय अथवा जिला निर्वाचन कार्यालय में लिखित रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि निर्वाचन प्रक्रिया को पारदर्शी और सुव्यवस्थित बनाने के लिए प्राप्त आपत्तियों एवं सुझावों पर नियमानुसार विचार किया जाएगा।

फिरोजाबाद। भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा उत्तर प्रदेश के नवनियुक्त प्रदेश उपाध्यक्ष सोनू सिंह के प्रथम बार जिला फिरोजाबाद आगमन पर सिरसांगंज क्षेत्र में कार्यकर्ताओं और समर्थकों द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया। कार्यकर्ता के तहत सोनू सिंह एक विशाल काफिले के साथ सिरसांगंज नगर पहुँचे। नगर सीमा में प्रवेश करते ही उनके स्वागत के लिए कई जगह भारी संख्या में समर्थक और स्थानीय लोग मौजूद थे। कार्यकर्ताओं ने फूल-मालाओं और साफा बांधकर उनका जोरदार अभिनंदन किया।

इस दौरान मॉडिया से बातचीत करते हुए भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष सोनू सिंह ने कहा कि फिरोजाबाद उनका गृह जनपद है और यह आलू के किसानों की समस्याओं को थली-तांती जानते हैं। उन्होंने विशेष रूप से आवश्यक किया कि एक साल के भीतर-अंदर आलू के किसानों को उनकी समस्याओं से बड़ी राहत दिलाई जाएगी, और आलू किसानों के लिए कुछ बढ़ा करना उनकी प्रार्थनाकर्ताओं में सबसे ऊपर रहेगा।

सोनु सिंह ने आगे कहा कि भाजपा का एक-एक कार्यकर्ता पार्टी की अलसी ताकत है। किसानों के अधिकारों, सम्मान और उनकी समृद्धि के लिए सरकार पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

चाण्डी चौकी से खितौली नहर पुल तक सड़क निर्माण शुरू, दर्जनो गांवों को मिलेगी राहत



अमापुर विधानसभा क्षेत्र में बुनियादी ढांचे की मजबूत करने और क्षेत्रीय विकास को रफ्तार देने के लिए शासन ने बड़ी पहल की है। क्षेत्रवासियों की वर्षों पुरानी मांग को पूरा करने हुए चाण्डी चौकी से थिखौलौली नहर हुए तक मुख्य मार्ग के नवनिर्माण का कार्य युद्ध स्तर पर शुरू हो गया है। लगभग 29 करोड़ की लागत से बनने वाली यह पक्की सड़क अमापुर क्षेत्र की आवाजाही और विकास को तत्क्षीर बदलने जा रही है।

चाण्डी चौकी से खितौली नहर पुल मार्ग लंबे समय से बेहद जर्जर स्थिति में था जिसके कारण आए दिन राहगीरों और

वाहन चालकों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। अब इस पक्की और चौड़ी सड़क के बन जाने से दर्जनों गांवों के ग्रामीणों, किसानों और व्यापारियों को सुगम यातायात की सुविधा मिलेगी। स्थानीय लोगों का कहना है कि सड़क बनने से न केवल समय और ईंधन की बचत होगी, बल्कि कृषि पैदावार को मंडियों तक ले जाना भी आसान हो जाएगा।

प्रतापपुर नहर पुल से हादसों पर लगी रोक

पहले भी विधायक की पहल पर प्रतापपुर के पास नहर पर नए पुल का निर्माण कराया गया था। पूर्व में वह स्थल 'ब्लैक स्पॉट' बन चुका था और लगातार सड़क हादसे हो रहे थे। पुल बनने के बाद से हादसों पर प्रभावी रोक लगी है और राहगीरों को बड़ी राहत मिली है।

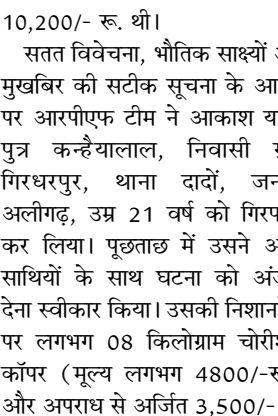
आगामी विधानसभा चुनाव की आहट के बीच क्षेत्र में राजनीतिक सरगर्मी बढ़ने के साथ-साथ विकास योजनाओं को भी पंख लग रहा है। अमरापुर क्षेत्र में एक के बाद एक हो रहे बड़े निर्माण कार्यों से साफ है कि स्थानीय जन-सुविधाओं, सुरक्षा और कनेक्टिविटी को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। सड़क निर्माण का कार्य शुरू होने से पूरे क्षेत्र के निवासियों में उत्साह का माहौल है।

"क्षेत्र का सर्वांगीण विकास और जन-सुविधाओं का विस्तार ही प्राथमिकता है। चाण्डी चौकी से खितौली मार्ग के लिए 79 करोड़ की स्वीकृति से क्षेत्रवासियों को वर्षों पुरानी समस्या से निजात मिलेगी।"

— हरिओम वर्मा, विधायक (अमापुर)

आरपीएफ ने एक आरोपी को दबोचा, मोबाइल में मिली ट्रान्सफार्मरों की रेकी की वीडियो

रलवे और वलवुत ट्रांसफार्मरीं को नलशाना ब्रनाने वाले अंतरजनपदीय और अंतरराज्यीय संगठलत गलरोह काल रलवे पुरखा बल पोस्ट कासंगन ने पदाफाश कलकल है। आरपीएफ ने गलरोह के एक सक्रलय सदस्य को गलरफार कर उसने कळजे से चोरी की कॉपर बाईडंग, नगदी और महत्वपूर्ण इलेक्ट्रॉनलक साक्ष्य बरामद कलए हैं। आरपी के मोबाइल से राजस्थान में ट्रांसफार्मरी की रेकी के प्रलडियों गलले हैं, ललससे एक बड़े प्रलडयंत्र काल खलुना हूआ है।



नगद बरामद किए गए।

गिरफ्तार अभियुक्त के मोबाइल फोन की जांच करने पर चौकाने वाले इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य हाथ लगे। मोबाइल में राजस्थान राज्य के दो अलग-अलग स्थानों पर स्थापित विस्तृत दुस्साफरों की वीडियो रेकी मिली है। इससे स्पष्ट हुआ कि आरोपी अपने फरार साथियों के साथ भाविय में वहां बड़ी चोरी की घटनाओं को अंजाम देने की योजना बना रहा था। यह साक्ष्य गिराह के पोजन में पर्व नियोजित आपराधिक

षड्यंत्र को प्रमाणित करता है।

कई जनपदों में फैला है काला कारोबार

अभियुक्त ने पूछाछा में स्वीकार किया कि वह अपने गिराह के साथ उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों में रेलव ट्रांसफार्मर, विद्युत ट्रांसफार्मर, मोबाइल टावरों के विद्युत उपकरण और अल्टरनेटर चुराता रहा है। उसने निम्नलिखित वारदातों को भी कबूला:

19 सितंबर 2026 की रात्रि: थाना दादों जिला अलीगढ़ क्षेत्र के ग्राम दरी अलाऊ में द्यूबवेले से विद्युत उपकरण चोरी।

उसी रात्रि: थाना छर्रा जिला अलीगढ़ क्षेत्र में
खेत से अल्टरनेटर चोरी।

01 अक्टूबर और 17 अक्टूबर
2026 की रात्रि: थाना पालीमुकीमपुर
जिला अलीगढ़ क्षेत्र स्थित बीएसएनएल
मोबाइल टावरों से विद्युत उपकरण
चोरी।

मौसंबी है फायदे की खेती

खाद एवं उर्वरक: मौसंबी यह बहुवर्षीय बागवानी फसल है। अच्छी उपज लेने के लिए नियमीत खाद एवं उर्वरक देना चाहिए जिससे पौधे का पोषण अच्छी तरह हो एवं अच्छी गुणवत्ता के फल प्राप्त हो मौसंबी के पौधे को प्रथम वर्ष 10 किलो गोबर कि खाद, 1किलो निम कि खाद, नाइट्रोजन 100 ग्राम, फास्फोरस 150 ग्राम, पोटाश 150 ग्राम देना चाहिए एवं 5 वर्ष से 30 किलो की गोबर कि खाद, 5 किलो निम खाद, नाइट्रोजन 800 ग्राम, फास्फोरस 300 ग्राम पोटाश 600 ग्राम कि निर्धारित मात्रा वर्ष मे तिन बार देना चाहिए इसके अतिरीक्त 250 ग्राम सुक्ष्म पोषक तत्व वर्ष मे एक बार देना चाहिए। इसके अतिरीक्त जिवामृत का उपयोग करना चाहिए। जिसमे 200 लि. इम मे 60 किलो गाय को गोबर 500 ग्राम राइजोबियम 500 ग्राम पी.एस बी। ट्रायकोडरमा 2 किलो गुड़, 2 किलो चना, उडद, मुंग, सोयाबिन, ज्वार का 2 किलो आटा 4 दिन सजाने के बाद सिंचाई के वक्त देने से अच्छे नतिजे मिलते है। यह वर्ष मे 2 से 3 बार दे इसमे अतिरिक्त हरी खाद का उपयोग करना चाहिए।

निंबु वर्गीय फलो मे मौसंबी यह अत्यंत महत्वपुर्ण फसल है। देश मे मुख्य रूप महाराष्ट्र के अतिरिक्त मध्यप्रदेश मे छिंदवाड़ा जिले मे सौसर एवं पांडुरा तहसील मे इसका उत्पादन लिया जाता है। सामान्य काली, 2 फिट तक गहरी वालुकामय जमीन मौसंबी के लिए उत्तम होती है। जमीन का पी. एच. मान 6.5 से 1.5 होना चाहिए।
जातियां: वाशीगटन नॅक्ले, जाफा, सतगुडी, कॅलेन्शीया, न्यूसेलर, काटोलगोल्ड।
खेती कि तैयारी: मौसंबी के पौधे लगाने के लिए ग्रीष्म काल मे खेत 18 ग् 18 फिट पर मार्क करके 1.5 ग् 1.5 ग् 1.5 फिट गड्ढे कर लेने चाहिए तथा उन्हें 1 से 1.5 माह तक वैसे ही छोड देना चाहिए जिससे धूप से हानिकारक किट मर कर जाए उसके पश्चात प्रत्येक गड्ढे मे 40 किलो गोबर की खाद या उपजाउ मिट्टी 1 किलो सुपर फास्फेट 100 ग्राम किटनाशक के मिश्रण से गड्ढे भर देना चाहिए। पौधे लगाते समय पौधे की अंख जमीन से 2 से 3 इंच उपर रहे इस बात का ध्यान रहे मौसंबी वर्ष भर कभी भी लगाई जा सकती है।
सिंचाई, निदाई-गुड़ाई : मौसंबी लगाने के बाद पौधे को स्थिर होने के लिए 2 महिने लगते है। पौधो को लगाने के बाद नियमीत पानी देना चाहिए। हो सके तो ड्रिप सिचाई का उपयोग करना चाहिए, पौधो को थंडक मौसम मे 15 से 20 दिन एवं एवं ग्रीष्म काल मे 8 से 10 दिन मे पानी देना चाहिए। खेत मे बरसात का पानी का संचय ना हो इसका ध्यान रखना चाहिए।
पौधो को आकार देना: मौसंबी को छतरी का आकार देना चाहिए जिसके लिए तने के 2.5 फिट से 4 से 6 टहनिया रखनी चाहिए प्रथम वर्ष पौधो को लकडी की सहायता से साहारा देना चाहिए।
बहार पकड़ना : मौसंबी मे मुख्य रूप से 3 बहार आते है। जुलै से अगस्त मृा सितंबर से नवंबर हस्त फरवरी से मार्च अंबिया 5 वर्ष बाद मौसंबी फल उत्पादन देने लायक हो जाती है।



मौसंबी यह सदा हरित पौधे होने से पानी का योग्य नियोजन एवं पौधे मे बहार की अवस्था पहचानने के लिए 1.5 से 2 माह विश्राम देने पर पौधो पर भरपुर् फुल आते है। इसे ही बहार कहा जाता है। पौधे मे बहार की अवस्था पहचानने के लिए 1.5 से 2 माह पौधो को पानी नही देना चाहिए। जिससे पौधो की पतिया पिली पडकर सूख जाती है एवं गलने लगती है। 30 प्रतिशत पत्तीया गिरने पर बहार की अवस्था पुर्ण हुई समझना चाहिए उसके पश्चात पौधे को खाद देकर सिंचाई करना चाहिए।

विश्राम अवस्था में पौधे की देखभाल

मौसंबी का बगिचा साफ करना चाहिए। फलदार पौधे से सुखी एवं रोगग्रस्त टहनिया निकाल लेनी चाहिए। तने पर गोंद दिखने पर साफ कर लेना चाहिए। तने को बोंडो पेस्ट करे। सम्पुर्ण पौधे पर क्लोरोपायरीफस 30 उस्, 2S हउ कॉपर ऑक्सीक्लोराइट पानी में 2 बार छिड़काव करें।

बगीचे की हलकी निदाई गुड़ाई करे।

फुल दिखने पर 4 उस् प्लानोफिक्स 13.00.45 50 हउ 10 ली पानी में घोल का छिड़काव करें।

मौसबी के कीट एवं रोग के लक्षण एवं उपाय

रफेद मक्खी–यह हलके पिले रंग की होती है एवं पत्तो का रस चुसती है। यह बिमारियाँ फैलाने में सहायक है।

काली मख्खी–यह पत्तो का रस चुसती है एवं समय पर नियंत्रण नही किया तो पौधे कि सभी टहनिया काली हो जाती है, हमारे क्षेत्र में इसे कोलसी कहते है।

सिटर्स सिल्ला–यह नयी कोमल पत्तों एवं फुलों पर बैठकर रस चुसती है एवं एक मिठा द्रव छोड़ती है जिसमें फुफुंद उत्पन्न होती है।

लिंफ माइनर–यह छोटा किट होता है जो पत्तियों में सुरंग बनाकर रहता है तथा पत्तियों का हरा भाग खाती है, जिससे विकृत होती है, इसका प्रकोप नई पत्तियों पर ज्यादा होती है।
उपचार –उपरोक्त किटों का समय पर नियंत्रण करना जरूरी है,

अन्यथा उत्पादन पर गहरा असर होता है। इसके लिए इमीडाक्लोप्रीड 0.5 मि.ली. या मोनोक्रोटोफास 3 मि.ली. प्रति ली. या ट्रायजोफास 3 मि.ली. पानी में घोल बनाकर बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

तने का किड़ा–यह तने में सुरंग बनाकर रहता है, एवं रात में छल खाती है, जिससे पौधा कमजोर होता है।

उपचार– तने से जाला साफ करके डायक्लोरोबास या पेट्रोल इंजेक्शन की साहयता से छेद में डालना चाहिए एवं गिली मिट्टी से छेद बंद कर देना चाहिए।

पत्तिया खाने वाली इल्ली–यह निंबु वर्गीय बागो में महत्वपुर्ण किट है, इसका प्रकोप होने पर पौधे पर्णरहित होते है।

उपचार– इल्ली की रोकथाम के लिए किनालफास 3 मि.ली. सेलक्रान या क्लोरोपायरीफास 3 मि.ली. प्रति लि. पानी में छिड़काव करे।

फल किड़ा–यह पके फलों में सुंड से छेद करते है जिससे फल पिले होकर गिर जाते है, जिससे नुकसान होता है।

उपचार– डायक्लोरोबास या नुवान 30 मि.ली. 10 ली. पानी में शाम के समय छिड़कान करना चाहिए एवं खेतों में धुवों करना चाहिए, बाजार में फल मख्खी के लिए ट्रेप आते है, वह लगाने चाहिए बगीचा खरपतवार मुक्त रखना चाहिए।

डायबैक्क पौधे की टहनियों से इसकी शुरूवात होती है, शुरूवात में पौधे के पत्ते पिले पड़ जाते है, एवं टहनियाँ उपर से सुखती है। समय पर उपचार नही किया तो पौधा पुरा सुख जाता है।

उपचार– पौधे की सुखी टहनिया काट लेनी चाहिए एवं कॉपर ऑक्सीक्लोराइड या रेडोमिल का छिड़काव करना चाहिए तथा रोगग्रस्त पौधे कि जड़े पौधे कि जड़े खुली करके उपरोक्त दवा पानी में मिलाकर डालनी चाहिए।

गमोसिस– यह फायटोथोरा नामक फंगस से होता है, जिससे तने में जख्म, अन्नद्रव कि, कमतरता जिवाणु, विषाणु से यह रोग

होता है, जिससे तना फट जाता है एवं एक चिपचीपा द्रव रिसता है। जिससे पौधा कमजोर होता है।

उपचार –पौधे की सुखी टहनिया काट लेनी चाहिए एवं कॉपर ऑक्सीफलोराइट या क्लोरोथोनीनील या रेडोमील का छिड़काव करना चाहिए। खेत में पानी रूकने न दे। पौधें तने में जख्म से द्रव का रिसाव देखते ही साफ करे, एरंडी के तेल में रेडोमील या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का मलहम लगाने से रिसाव बंद हो जाता है। पौधे को वर्ष में 2 बार बोंडों पेस्ट लगाना चाहिए।

कैंकर –यह भयानक रोग है, इस भयानक रोग का प्रकोप फल एवं पत्तियों में दिखाई देता है, शुरूवात में पत्तों के निचले भाग में लक्षण प्रगट होते है, जिससे पिले भुरे रंगे के धब्बे दिखाई देते है। जिससे पत्तिया पिली पड़ कर गिर जाती है। फल धब्बे खुरदरे भुरे रंग के छिलके की गहराई तक होते है, जिससे छिलके फट जाते है।

उपचार– बरसात में रोगग्रस्त टहनिया काटकर जला देनी चाहिए, रोगग्रस्त पौधों को बरसात में कार्बेन्डाजीम 2 ग्राम प्रति ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए एवं कॉपर ऑक्सीफलोराइट 3 ग्राम ,स्ट्रोसाइक्सीन 0.25 ग्राम प्रति ली. पानी में घोल बनाकर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए।

फलों की परिपक्वता एवं उत्पादन

मौसंबी । से 9 माह में परिपक्व हो जाते है। अंबिया बहार नवंबर एवं मृग फरवरी माह में फलों का रंग हरे से हल्का पिला फलों में चमक आ जाती है एवं फलों की कठोरता कम हो जाती है। तो समझना चाहिए कि, फल परिपक्व हो गये है। फलो की उत्पादकता 5 से 6 वर्ष पौधों से 200 से 400 फल एवं 10 वर्ष से आगे 1000 तक फल प्राप्त होते है। पौधे का जीवन अच्छी व्यवस्था होने पर 30 से 40 वर्ष उत्पादन देते है।

मुनगा: कम पानी में भी खेती संभव

किस्में: रोहित 1, कोयम्बदूर 2, पी.के.एम. 2।

जलवायु

सहजन की खेती की सबसे बड़ी बात ये है कि ये सूखे की स्थिति में कम से कम पानी में भी जिंदा रह सकता है। कम गुणवत्तावाली मिट्टी में भी ये पौधा लग जाता है। इसकी वृद्धि के लिए गर्म और नमीयुक्त जलवायु और फूल खिलने के लिए सूखा मौसम सटीक है। सहजन के फूल खिलने के लिए 25 से 30 डिग्री तापमान अनुकूल है।

मिट्टी की आवश्यकता

सहजन का पौधा सूखी बलुई या चिकनी बलुई मिट्टी (जिसमे 6.2 से 1.0 न्यूट्रल की मात्रा तक अम्लीय पीएच हो) में अच्छी तरह बढ़ता है। ये पौधा समुद्र तटीय इलाके की मिट्टी और कमजोर गुणवत्ता वाली मिट्टी को भी सहन कर लेती है।

नर्सरी उत्पादन

सहजन की खेती में अगर आप नर्सरी में उगाये पौधे का इस्तेमाल करना चाहते हैं तो 18 सेमी की ऊंचाई और 12 सेमी की चौड़ाई वाले पॉली बैग का इस्तेमाल करें। बैग के लिए मिट्टी का मिश्रण हल्का होना चाहिए, उदाहरण के तौर पर तीन भाग मिट्टी और एक भाग बालू। प्रत्येक बैग में एक से दो सेमी गहराई में दो या तीन बीज लगाएं। मिट्टी में नमी रखें लेकिन ध्यान रखें कि वो ज्यादा भीगा न हो। बीज की उम्र और ग्री ट्रीटमेंट मेंथड के बिनाब से अंकुशण 5 से 12 दिन के भीतर शुरू हो जाता है। बैग से अतिरिक्त पौधा निकाल दें और एक पौधा प्रत्येक बैग में छोड़ दें। जब पौधे की लंबाई 60 से 90सेमी हो जाए तब उसे बाहर लगा सकते हैं। पौधे को बाहर लगाने से पहले बैग की तलहटी में इतना बड़ा छेद बना दें ताकि उसकी जड़ें बाहर निकल सके। इस बात का ध्यान रख कि पौधे के जड़ के आसपास मिट्टी अच्छी तरह लगा दें। पौधारोपन से पहले बीज को पानी में रात भर भीगने के लिए डाल दें पौधारोपन से पहले छिलके को उतार लें छिलके को हटाकर सिर्फ गुठली को लगाएं

भूमि या मिट्टी की तैयारी
अगर बड़े प्लॉट में पौधे को लगाना है तो जमीन की पहले अच्छे से जुताई कर लें। बीजारोपन से पहले 50 सेमी गहरा और चौड़ा गड्ढा खोद दें। इस गड्ढे से मिट्टी को ढीली होने में और जड़ को नमी ग्रहण करने में मदद मिलता है। इससे पौधे की जड़ तेजी से फैलती है। कम्पोस्ट या खाद की मात्रा पांच किलो प्रति गड्ढा ऊपरी मिट्टी के साथ मिलाकर गड्ढे के अंदर और चारो तरफ



फसल की कटाई-छटाई

पेड़ की कटाई-छटाई का काम पौधारोपन के एक या डेढ़ साल बाद (उंडे मौसम में तरजीह दे सकते हैं) की जा सकती है। दो फीट की ऊंचाई पर प्रत्येक पेड़ में3 से 4 शाखाएं छंट सकते हैं। हानिकारक कीट और रोग: सहजन अधिकांश कीटों से लड़ने की क्षमता रखता है। जहां ज्यादा पानी जमा होने की स्थिति है वहां डिप्लोडिया रूट रॉट पैदा हो सकता है। भीगी हुई स्थिति में पौधारोपन मिट्टी के ढेर पर किया जाना चाहिए ताकि ज्यादा पानी अपने-आप बह कर निकल जाए। पशु, पेड़, सुअर और बकरियां मोरिंगा के पौधे, फल और पत्तियों को खा जाती हैं। मोरिंगा के पौधे को पशुओं से बचाने के लिए बाड़ या पौधे के चारों ओर लिविंग फेन्स लगाया जा सकता है। कहा जाता है कि भारत में अगर कीटनाशकों का छिड़काव नहीं किया जाता है तो केटरपिलर की वजह से पत्ते झड़ने लगते हैं।

फसल कटाई

इंसानों के खाने के लिए जब कटाई की जाती है तो फली को तभी तोड़ लिया जाना चाहिए जब वो कच्चा (करीब एक सेमी

डाल दें)। यहां उस मिट्टी को गड्ढे में डालने से बचें जो खुदाई के दौरान निकाली गई थी। साफ ऊपरी मिट्टी में लाभकारी जीवाणु होते हैं जो जड़ की वृद्धि को तेजी से बढ़ावा दे सकते हैं। नर्सरी से पौधे को निकालने से पहले गड्ढे को पानी से भर दें या फिर अच्छी बारिश का इंतजार करें और उसके बाद बैग से पौधा निकाल कर लगा दें। जिस इलाके में भारी बारिश होती है वहां मिट्टी को ढेर की शक्ल में खड़ा कर सकते हैं ताकि पानी वहां से निकल जाए। शुरुआत के कुछ दिनों तक ज्यादा पानी नहीं दें। अगर पौधा गिरता है तो उसे एक 40सेमी छड़ी के सहारे बांध दें।

सीधा पौधारोपन

अगर सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध हो तो (मकान के पिछले हिस्से में) पूरे साल पेड़ को सीधे लगाया और बढ़ाया जा सकता है। सबसे पहले पौधारोपन के लिए एक गड्ढा तैयार करें, पानी डालें और पौधारोपन से पहले कम्पोस्ट या खाद से मिश्रित उपरी मिट्टी को गड्ढे में डाल दें। नमी वाले मौसम में बड़े खेत में पेड़ को सीधे लगाया जा सकता है।

कलम(कटिंग) से विकास या बढ़त

कलम लगाने के लिए हरी लकड़ी को छोड़कर कठोर लकड़ी लें। कलम की लंबाई 45 सेमी से 1.5 एम लंबा और 10 सेमी मोटा होना चाहिए। कलम को सीधे लगाया जा सकता है या फिर नर्सरी में थैले में लगाया जा सकता है। कलम का सीधा पौधारोपन रोशनी और बलुई मिट्टी में करें। पौधे का एक तिहाई हिस्सा जमीन में लगाएं (जैसे कि अगर कलम की लंबाई 1.5 मी है तो 50 सेमी मिट्टी में लगाएं)। ज्यादा पानी भी नहीं डालें क्योंकि मिट्टी अगर ज्यादा भारी और भीगा रहा तो जड़ सड़ सकता है। जब कलम को नर्सरी में लगाया जाता है तो जड़ का विकास धीरे-धीरे होता है। अगर संभव हो तो जड़ के विकास को बढ़ावा देने के लिए मिट्टी में फॉस्फोरस मिलाएं। नर्सरी में लगाए गए कलम को दो या तीन महीने बाद बाहर लगाया जा सकता है।

पौधों के बीच दूरियां

सहजन या मोरिंगा के सघन उत्पादन के लिए एक पेड़ से दूसरे पेड़ के बीच की दूरी तीन मीटर हो और लाइन के बीच की दूरी भी तीन मीटर होनी चाहिए। सूर्य की पर्याप्त रोशनी और हवा को सुनिश्चित करने के लिए पेड़ को पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर लगाएं। अगर पेड़ वीथि सस्यन प्रणाली (अले क्रापिंग सिस्टम) का हिस्सा है तो दो लाइन के बीच 10 मीटर की दूरी होनी चाहिए। पेड़ के बीच का हिस्सा खर-पतवार से मुक्त होना चाहिए।



खाद और ऊर्वरक

आमतौर पर मोरिंगा का पेड़ बिना ज्यादा ऊर्वरक के ही अच्छी तरह से तैयार हो जाता है। पौधारोपन से 8 से 10 दिन पहले प्रति पौधा 8 से 10 किलो फार्म खाद डाला जाना चाहिए और पौधारोपन के दौरान प्रति हेक्टेयर 50 किलो नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटास (सभी 50-50 किलो) डाला जाना चाहिए। प्रत्येक छह महीने के अंतराल पर तीनों की इतनी ही मात्रा पौधे में डाली जानी चाहिए।

सिंचाई: सहजन के पौधे को ज्यादा पानी नहीं चाहिए। पूरी तरह से सूखे मौसम में शुरुआत के पहले दो महीने नियमित पानी चाहिए और उसके बाद तभी पानी डालना चाहिए जब इसे जरूरत हो। मोरिंगा पेड़ तभी फूल और फल देता है जब पर्याप्त पानी उपलब्ध होता है। अगर साल भर बरसात होती रहे तो मोरिंगा पेड़ भी साल भर उत्पादन कर सकता है। सूखे की स्थिति में फूल खिलने की प्रक्रिया को सिंचाई के माध्यम से तेज किया जा सकता है। इसका पौधा काफी दमदार होता है और सूखे मौसम में प्रत्येक दो सप्ताह में एक बार सिंचाई की जरूरत होती है। वहीं, व्यावसायिक खेती में सिंचाई की ड्रिप तकनीक का सहारा लिया जा सकता है जिसके तहत गर्मी के मौसम में प्रति पेड़, प्रतिदिन 12 से 16 लीटर पानी दिया जा सकता और अन्य मौसम में ये मात्रा घटकर सीधे आधी रह जाती है। जहां पानी की समस्या है वहां ज़िंदगी बचाने वाली सिंचाई या घड़े से प्रति दो सप्ताह पर एक बार सिंचाई की जाती है। सूखे मौसम में ऐसा करने से फसल की रक्षा हो जाएगी।

